संजय की कलम से ..

तपश्चर्या का फल

जो तपस्वी होगा उसके चेहरे से, उसके नयनों से दूसरों को दिखाई पड़ता है। जैसी जिसकी स्मृति होती है, वैसी उसकी वृत्ति होती है, उसकी वो पर्सनैलिटी लोगों के सामने जरूर आती है। जो शिव बाबा की याद में समाया होगा, उसके नयन, उसकी मुस्कराहट, उसके चेहरे की झलक, उसके मुख के वचन, उसका व्यवहार ऐसा होगा जिससे प्रत्यक्षता होगी।

प्रत्यक्षता केवल ज्ञान समझाने से नहीं होगी। ये तो ज्ञान के पाठ हैं जिनमें हम परमात्मा का, आत्मा का और सृष्टि-चक्र का परिचय देते हैं। लोगों को महसूस होना चाहिए कि हमने जो योग सीखा है, उससे हमारे में क्या परिवर्तन आया है। **जैसे हम किसी को विजिटिंग कार्ड (परिचय-पत्र) देते हैं, उसको देखने से पता पड़ता है कि हमारी योग्यतायें क्या हैं, शिक्षा क्या है, ऐसे ही हमारा चेहरा और हमारी पर्सनैलिटी (व्यक्तित्व) हमारा विजिटिंग कार्ड हो। चेहरा ही परिचय दे। हम बोलें या न बोलें, हमारी पर्सनैलिटी हमारे बारे में बोले।**

बाबा की जीवन कहानी में आता है कि सैकड़ों व्यक्तियों के बीच बाबा जा रहे हों तो लोगों का ध्यान बाबा की तरफ जाता था कि यह व्यक्ति विशेष है। जिन्होंने मम्मा को देखा है, बाबा को देखा है उनको मालूम है। हमने भी कई माताओं को देखा है, महात्माओं को देखा है लेकिन मम्मा-बाबा सबसे विशेष थे, अनोखे थे। अगर आप मम्मा को चलते हुए देखते, बात करते हुए देखते, बैठे हुए देखते, उनके चेहरे को देखते, आप ही क्यों, कोई भी व्यक्ति देखता तो वह भी अनुभव करता कि ये विशेष हैं।

कई जगह हमने देखा है, बड़े से बड़ा व्यक्ति केवल तब तक विरोध करता रहा जब तक वो मम्मा के सामने नहीं आया। अगर वह मम्मा या बाबा के सामने चला गया और बात भी कर ली तो अवश्य बदल गया।

कोई भी व्यक्ति मम्मा-बाबा की क्लास में भले एक पल के लिए ही आया या उनके चित्र को भी देख लिया तो महसूस करता था कि ये वैश्विक (Universal) हैं। विदेशी भाई-बहनें भी अपने अनुभव में सुनाते हैं कि वे बाबा-मम्मा के चित्र को देखते-देखते ही अशरीरी स्थिति को प्राप्त होते रहे हैं। यही तपश्चर्या का फल है, जो सबसे बड़ी सेवा है। ❖

अमृत-सूची

- कर्म और फल *(सम्पादकीय)* 4
- एकाग्रता की शक्ति..... 7
- मातेश्वरी गुप्त तपस्विनी थी 8
- मेरा बाबा, मेरा साथी 9
- स्थिरता सीखी मम्मा से 10
- मम्मा का गरिमायुक्त.....12
- 'पत्र' संपादक के नाम 13
- पुरुषोत्तम संगमयुग एवं.....14
- प्रकृति के ऋण की अदायगी..17
- पर्यावरण सुरक्षा *(कविता)*..... 19
- मेरा नाम रखा 20
- अथाह ज्ञान-भण्डार थे 21
- क्रोध पर विजय की ओर..... 23
- माँ जगत अम्बा *(कविता)* 24
- परम भाग्यशाली कुमारी..... 25
- देवी सरस्वती का वरदान..... 27
- अलौकिक माँ की 29
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- मैं सभी दवाइयों से मुक्त 32
- सचित्र सेवा समाचार..... 34

सदस्यता शुल्क

	वार्षिक	आजीवन
भारत		
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414154383

कर्म और फल

हमारा प्रत्येक कर्म एक ऊर्जा उत्पन्न करता है जिस से कर्म के अनुरूप वैसा ही प्रत्युत्तर मिलता है। हम जो बोते हैं, वही काटते हैं। आम बोयेंगे तो अमरूद नहीं बटोरेंगे। जितना गुड़, उतनी मिठास होती है। एक बालटी पानी में 10 ग्राम गुड़ डाला, कितना मीठा हुआ होगा! इसी बालटी में 5 किलोग्राम गुड़ डालिए, फिर मिठास देखिए। इसलिए कहा जाता है, जितने का उतना मिलता है, प्रकृति इस जितने और उतने से बंधी हुई नहीं है। जब हम बीज बोते हैं तो एक के बदले एक की प्राप्ति नहीं होती, एक से दो गुणा, चार गुणा या कई गुणा प्राप्ति हो सकती है। गोभी के बीज से गोभी का एक ही फूल बनता है परंतु मटर के बीज से कई मटर के दाने बन जाते हैं।

हमारे भूल जाने से कर्म-फल मिट नहीं जाता

मानव को अपना किया हुआ कर्म याद है या नहीं, इससे कर्मफल की प्राप्ति में कोई फर्क नहीं पड़ता। मान लीजिए, हमने किसी बैंक से उधार ले रखा है पर हम भूल गये तो क्या उधार पर ब्याज नहीं लगेगा, अवश्य लगेगा। उधार देने वाले ने हमारे अंगूठे का चिन्ह या कोई अन्य प्रमाण रखा है तो वह भी, हमारे भूलने से, नष्ट तो नहीं हो जाता। वह उन प्रमाणों के सहयोग से, न्यायालय के माध्यम से हमसे पैसा वसूलता है। इसी प्रकार, किसी को धन देकर हम यदि भूल जाएँ तो क्या, हमारे भूलने से, उस दिए का फल रुक जायेगा? नहीं, फल जमा होता रहेगा और एक दिन अनायास ही प्राप्ति हो जायेगी। यही बात कर्मों पर भी लागू होती है। **बुरा कर्म किया माना कर्ज चढ़ाया, जो ब्याज सहित, इच्छा या अनिच्छा से चुक्तू करना ही पड़ेगा। ना चुक्तू करें तो देह-त्याग के बाद धर्मराज हमारे कर्मों का वीडियो दिखाकर हमें याद दिलायेगा, सज़ा भोगने के लिए तैयार करेगा और सज़ा द्वारा हिसाब चुक्तू करायेगा। इसी प्रकार, हमने अच्छा कर्म किया माना जमा किया जो समय आने पर ब्याज सहित प्राप्त होगा ही होगा।**

मनोवृत्ति दिखती नहीं है

बीज हमेशा गुप्त बोया जाता है। हमें क्या पता, बोने वाला क्या बो रहा है। अनुमान लगा सकते हैं कि चने बो रहा होगा पर बीज सरसों का भी तो हो सकता है। हाँ, जब अंकुर बाहर निकलेगा तब पता पड़ेगा कि क्या बोया था और असली फल तो तब निकलेगा जब वे अंकुर बड़े होकर दानों से भर जायेंगे और वे दाने कुशलतापूर्वक घर पहुँच जायेंगे। इसी प्रकार, कोई व्यक्ति कर्म कर रहा है, उस समय उसका फल थोड़े दिखाई देता है। कोई खेत की ओर जाने वाला व्यक्ति खेत में पानी देने जा रहा है या पड़ोसी की फसल चुराने जा रहा है, किसको पता है? उसके मन का संकल्प किसी को दिखता थोड़े ही है! संसार के करोड़ों लोग कार्य में तो लगे हैं पर किसी को क्या पता कि वे किस मनोवृत्ति से कार्य कर रहे हैं। मनोवृत्ति ही फिर वाणी और कर्म में बदलती है। मनोवृत्ति दिखती नहीं, कर्म को देख हम प्रश्न उठाते हैं कि यह क्यों हुआ? अरे, तुमने बीज देखा था क्या जो कह रहे हो, यह क्या हुआ, क्यों हुआ। वही हुआ जो बीज बोया गया था। इसलिए भगवान शिव कहते हैं, जो भी होता है, स्वीकार करो। क्यों, क्या, कैसे करने से होनी रुकेगी तो नहीं, तो फिर मन की स्थिरता को क्यों खोया जाये। प्रकृति भी सूक्ष्म नियमों में बंधी है; कारण, कार्य और परिणाम का चक्कर जड़ प्रकृति में भी है।

पूर्व जन्म का अधिकार मिला पुनर्जन्म में

कर्म मनुष्य का पीछा करता है। शरीर छूटने पर भी वह आत्मा से लगा रहता है। मान लीजिए, किसी व्यक्ति के साथ हमारा कोर्ट में सपंत्ति के लिए केस चल रहा है और मन में द्वेष भी चल रहा है। इसी बीच हमारा शरीर छूट गया। देखने में तो यही लगेगा कि मृत्यु के साथ ही हम उस मुकद्दमे से भी बरी हो गये परंतु ऐसा नहीं है। मुकद्दमे के दूसरी ओर खड़े व्यक्ति को हमारी निरंतर याद बनी हुई है। दुनिया से हम मर गये पर उसके द्वेष के सहभागी के रूप में उसके दिल में तो हम अब भी ज़िन्दा हैं। वह सामने हमसे नहीं लड़ रहा पर गुप्त लड़ाई कर रहा है। कुछ वर्षों में उसका भी शरीर छूट गया तो वह सीधा हमारे आस-पास ही जन्म लेगा या दूर भी जन्म लेगा तो किसी न किसी कारण हमारा उससे संबंध जुट जायेगा। कई बार हम समाचार सुनते हैं कि किसी धनाढ्य को कहीं एक तलाकशुदा औरत मिली, उसने उससे शादी की, उसे विश्वासपात्र समझा पर उस महिला ने उस धनाढ्य को पूरी तरह काबू कर लिया, उसका सारा धन अपने नाम कर लिया और फिर उसे तलाक देकर, धन लेकर अन्यत्र चली गई। यह कौन थी जो अचानक आई और अचानक चली गई। यह वही आत्मा थी जिसके साथ मुकद्दमे को पूरा किये बिना ही हम इस जीवन में चले आये थे, उसे अपना अधिकार पूर्व जन्म में नहीं मिल सका तो यूँ पुनर्जन्म लेकर, हमसे मीठा संबंध जोड़कर अपना हिस्सा ले गई। बिना कोर्ट के कर्मगति ने उसका हिस्सा उसे दिलवा दिया।

कर्मों की गहन गति

शास्त्रों में एक प्रसंग आता है कि एक महर्षि थे माण्डव्य। उनके आश्रम में चोर आकर छिप गये। चोरों को सामान सहित पकड़ लिया गया परंतु न्यायालय ने डाकुओं के साथ महर्षि को भी सूली का दण्ड दिया। अन्य ऋषियों ने राजा से उनकी निर्दोषता बताई। राजा ने सूली रुकवा दी, उन्हें तख्ते से नीचे उतार लिया गया। तब तक जितना कष्ट हो चुका था, उसके लिए राजा ने माफी मांगी। माण्डव्य ने कहा, पूर्व जन्म में मैंने अनेक पशु-पक्षियों को सताया था, फलस्वरूप मुझे भारी यातनाओं के साथ मरना था पर इस जन्म की तपस्या ने उन कष्टों को घटा दिया, फिर भी कोई भोग, पूर्ण शमन नहीं हो सका, उसका कुछ तो दण्ड अवश्य मिलना था ही, मेरे अशुद्ध कर्मों का ही यह फल था, आप सब निर्दोष हैं।

कर्मफल पकता ज़रूर है

उपरोक्त प्रसंग पर विचार करने पर वर्तमान समय के कर्मों की कई गुत्थियाँ सुलझती हैं। कई बार कोई तथाकथित ऊँची हैसियत वाला व्यक्ति हत्या करके, छुरे को गरीब के बाड़े में फेंक देता है। वह हैसियत वाला छूट जाता है और गरीब व्यक्ति फांसी पर चढ़ जाता है लेकिन असली कर्त्ता के सामने उसके कर्म का फल, समय पर तो आना ही है। इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में। हो सकता है कि इस हैसियत वाले के अगले जन्म में इसके घर में चोर आ छिपें और इस पर चोरी करवाने या चोरों को शरण देने का इल्जाम लग जाए और इस निर्दोष को, पूर्व के संचित पाप के फलस्वरूप फांसी लग जाए। **कर्म का फल पकता ज़रूर है, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में या उससे अगले में। कर्त्ता को वह फल खाना ज़रूर पड़ेगा।**

कर्म और फल के बीच का अंतराल ज़रूरी है

कई बार कई लोग मनोरंजन के लिए, कमाई के लिए, खाने की हवस के लिए जानवरों पर अत्याचार करते हैं फिर भी सारा जीवन, उन पर कुछ बुरा नहीं घटता। देखने वाले

कहते हैं, इन पापियों को भगवान कुछ नहीं कहता और हम जो रोज़ जानवरों को दाना डालते, गऊ की सेवा करते, सब जीवों पर दया करते फिर भी हमारे पर दुखों के पहाड़ क्यों गिरते हैं? ऐसे प्रश्नों के उत्तर भी उपरोक्त प्रसंग में हैं। ऋषि ने अत्याचार तो पिछले जन्म में किया था, तब तो उसे सूली पर चढ़ाया गया नहीं, और इस जन्म में तो तपस्या कर रहा था, फिर भी सूली पर चढ़ना पड़ा। कारण यही है कि कर्म का फल निकलने में समय लगता है। आज बोई गई आम की गुठली पाँच साल बाद आम देगी। इसी प्रकार कर्म भी 5 साल, 50 साल या 500 साल बाद भी फल बनकर सामने आ सकता है। इसी बीच यदि पुण्य कमा लिया गया तो पाप के फल के रूप में होने वाला नुकसान या मिलने वाला दुख, पहाड़ से राई या सूली से कांटा हो सकता है जैसे कि उपरोक्त प्रसंग में महर्षि के साथ हुआ। फल मिलने में जो समय का अंतराल मिलता है, उससे मनुष्य फायदा उठा ले, श्रेष्ठ कर्म करके पाप की जटिलता को सुलझा ले, यह भी कर्म-गति द्वारा दिया गया सुन्दर अवसर ही कहेंगे। कई सोचते हैं, सही न्याय तो तब हो जब गाली देने वाले की जीभ तुरंत कट जाए, पर नहीं, इस सृष्टि-चक्र के नियम इतने कठोर नहीं हैं, गाली देने वाले को पश्चाताप का मौका, सुधरने और बदलने का अवसर दिए बिना, तुरंत फल नहीं मिल सकता।

सहज मिले सो दूध बराबर

आधुनिक कंपनियाँ अपने शेयर होल्डर्स को नफा बांटती हैं क्योंकि वे निवेश करते हैं। जिसने निवेश नहीं किया, उसे नफा रूपी फल भी नहीं मिलेगा। कर्म के हिसाब में भी, हम जिस क्षेत्र में निवेश करेंगे, उसी क्षेत्र से प्राप्ति हो जायेगी। जिस क्षेत्र में नहीं करेंगे, उस क्षेत्र में प्राप्ति नहीं होगी। इस राज़ को न जानने के कारण मनुष्य के मन में प्रश्न उठता है, मुझे क्यों नहीं मिला? जब क्यों आता है तो उसके साथ गुस्सा, चिड़चिड़ापन आता, असंतोष भी आता और फिर हम दूसरे के बोये हुए को खाने का प्रयास करते, इससे कर्म का हिसाब और उलझ जाता। इसलिए कहा गया है, सहज मिले सो दूध बराबर.....।

क्यों, क्या में नहीं उलझें

एक धर्मशाला के उद्घाटन अवसर पर नंबरवार नाम सहित कुर्सियाँ लगी हैं। धर्मशाला निर्माण में सबका गुप्त धन लगा है, केवल आयोजकों को पता है कि किसने कितना योगदान दिया है। जिनकी कुर्सियाँ सबसे अंत में हैं, उनको असंतुष्टता है कि हमारा नाम आगे-आगे क्यों नहीं? वे आयोजकों पर इल्जाम लगायेंगे, आगे की सीट वालों से ईर्ष्या करेंगे क्योंकि उन्हें सबके योगदान का ज्ञान नहीं है। यह तो एक छोटी-सी धर्मशाला के निमित्त कार्यक्रम में, आगे-पीछे की सीटों की छोटी-सी बात है परंतु यह **सारी दुनिया तो बहुत बड़ी धर्मशाला है, पाँच हजार साल से चली आई है। कुल साढे छह सौ करोड़ आत्माओं ने कहाँ-कहाँ, क्या-क्या बीज बोया, कब बोया, कितना बोया, कितना पिछले जन्म में भोगकर आये, कितना कर्जा लेकर आये, क्या हममें से कोई जानता है? तो नाहक क्यों, क्या में हम क्यों उलझें?**

एक साथ प्रालब्ध

कई बार एक साथ सैकड़ों मनुष्य दुघर्टनाग्रस्त या मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, प्रश्न उठता है कि एक साथ प्रालब्ध कैसे बनी? इसका कारण यही समझ में आता है कि किसी पाप में सबने एक साथ मिलकर हाथ डाला है। जैसे कहते हैं, मांस काटने वाला, बेचने वाला, खरीदने वाला, पकाने वाला, खाने वाला.. सब अपराधी। गौहत्या या अन्य हिंसा के कार्य का प्रस्ताव सबने इकट्ठे होकर पास किया। जिसकी जितनी ज्यादा सम्मति थी, उस पर उतना ही ज्यादा कष्ट आ गया। **(क्रमशः)**

– ब्र.कु. आत्म प्रकाश

एकाग्रता की शक्ति

• दादी गुलजार

मौन में रहना सबके लिए ज़रूरी है क्योंकि मौन से दिमाग की एनर्जी बढ़ती है। जो ज्यादा बोलते हैं उनका दिमाग कमजोर हो जाता है क्योंकि शरीर की एनर्जी व्यर्थ जाती है इसलिए बाबा हम लोगों को सिखाते थे कि जो काम दो शब्दों में हो सकता है उसके लिए दस शब्द नहीं बोलो। हम जितना बोलेंगे, जैसा बोलेंगे, वैसी ही आदत पड़ती जायेगी। बात को सिद्ध करने के लिए ज्यादा बोलना ही पड़ता है। सिद्ध करने के लिए बहुत प्वाइंटस की आवश्यकता होती है जैसेकि वकील को केस जीतने के लिए बहुत बोलना पड़ता है। बाबा कहते, बच्चे, तुम जितना कम बोलो उतना अच्छा है। अपनी शक्ति को हर तरह से बचाओ।

मनोबल शब्द बहुत अच्छा है, इसमें मन को एक ही संकल्प में एकाग्र करने का अभ्यास करना होता है। बहुतकाल के अभ्यास से हमारा मनोबल बढ़ने लगता है। योग में भी मन को कोई भी एक स्थिति में एकाग्र करना होता है। **मन में बल तब आ सकता है जब आपका मन एकाग्र हो। एकाग्रता की शक्ति बहुत ज़रूरी है। आपके पास एकाग्रता की शक्ति होगी तो इस पुरुषार्थी जीवन में अगर कोई विघ्न भी आता है तो आप एक सेकंड में उसको बिन्दी लगा सकेंगे।** बाबा कहते हैं, कोई भी बात हो, आप आत्मा बिन्दु बन, बिन्दु बाप को याद करते हुए बीती को बिन्दी लगाओ। इन तीन बिन्दियों का अमृतवेले ही तिलक लगा लो तो फिर कोई विघ्न नहीं आयेगा और अगर आता भी है तो उसमें आप विजयी होंगे। बाबा की याद से शक्तियाँ आती हैं, उन शक्तियों से जो चाहो वह हो सकता है।

जैसे गाड़ी का ब्रेक जहाँ चाहें वहाँ लगा सकते हैं और अगर ब्रेक नहीं लगी या नहीं लगाई तो एक्सीडेन्ट हो जाता है। ऐसे ही मेडिटेशन भी वही कर सकता है जो मन को कंट्रोल करना जानता है। नहीं तो मन सदा ही किसी ना किसी बात में उलझा हुआ रहेगा। मन की कंट्रोलिंग पावर अगर नहीं है तो व्यर्थ संकल्प, नेगेटिव संकल्प, पता नहीं कौन-कौन से संकल्प आकर आपको घेर लेंगे इसलिए मनोबल को बढ़ाने के लिए एक तो एकाग्रता चाहिए, दूसरा कंट्रोलिंग पावर। मन की एकाग्रता माना मैं जो चाहूँ, जहाँ चाहूँ, जैसे चाहूँ, जिस समय चाहूँ, मन को कंट्रोल कर लूँ।

मन की एकाग्रता से ही निर्णय शक्ति बढ़ेगी। इसके लिए चाहिए मन की स्वच्छता। बाबा के कमरे में जाकर सच्चे संबंध से अपने दिल की बात करके, मन को एकदम खाली करो तो दिल हल्का हो जायेगा। सबसे बड़ा खज़ाना है – संकल्प, एक सेकण्ड भी संकल्प शक्ति को गँवाया तो एक सेकंड नहीं लेकिन अनेक जन्मों के लिए भाग्य गँवाया।

चेक करो कि जो भी कर्म हमने किया उससे फायदा हुआ? अगर समझो कोई कर्म का परिणाम न बुरा हुआ, न अच्छा हुआ तो यह भी वेस्ट ही है। और जो वेस्ट होता है उसका बोझ होता है। जब बोझ होगा तो ऊपर कभी नहीं जा सकते हैं क्योंकि भारी चीज़ ऊपर नहीं जाती है। इसलिए मनोबल बढ़ाने के लिए ये सब बातें अटेन्शन में रहनी चाहिएँ। इसके लिए मम्मा एक बात बार-बार कहती थी, 'हर घड़ी अपनी अंतिम घड़ी समझो।' ❖

मातेश्वरी गुणों की खान थी, गुप्त तपस्विनी थी

• ब्रह्माकुमारी दादी निर्मलशान्ता

मम्मा बहुत गंभीर और शान्त थी। मम्मा मुरली भी चलाती थी तथा यज्ञ की सारी ज़िम्मेवारी भी निभाती थी। सब कार्य कराना, संभालना उनको ही करना पड़ता था, फिर भी उनके चेहरे, चलन और व्यवहार में कोई अंतर नहीं आता था। वे एकदम शान्त, गंभीर, मधुर और एकरस रही। उदाहरणार्थ, जब यज्ञ में बेगरी पार्ट आया, कई बार खाने के लिए किसी को कुछ नहीं मिला तो कइयों के चेहरे फीके, निस्तेज होते थे लेकिन मम्मा को खाना मिले, न मिले, उनके चेहरे पर सदा मुस्कान, निश्चिन्तता, धैर्य और बाबा पर अचल-अटल विश्वास छलकता था। यहाँ तक कि यज्ञ में किसी का शरीर भी छूट जाता था तो भी मम्मा के चेहरे पर कोई बदलाव नहीं दिखाई पड़ता था। जब मम्मा की लौकिक माँ का देहांत हुआ, उस समय भी मम्मा ऐसी रही जैसे लौकिक रीति से वे उनकी कुछ भी नहीं हैं। एकदम शान्त, स्थिर और एकरस। कभी कुछ हो जाये तो मम्मा हमें थोड़ा भी डाँटे अथवा नाराज़ होवे, ऐसा कभी देखा ही नहीं। हमने तो अपनी इस ज़िन्दगी में मम्मा में नाराज़गी कभी देखी ही नहीं। सन्तरी बहन बाबा के साथ रहती थी और मैं मम्मा के साथ रहती थी। मैंने मम्मा को तो बहुत करीब से देखा है।

मम्मा का व्यक्तित्व

मम्मा एकदम रॉयल थी। वह कभी ज़ोर से नहीं हंसती थी। सिर्फ मुसकराती थीं। मम्मा में गुस्सा था ही नहीं। मम्मा कहती थी कि काम, क्रोध, अहंकार आदि नरक के द्वार हैं इसलिए तुम बच्चों को कभी गुस्सा नहीं करना है। अगर कोई गुस्सा करता था तो उस समय मम्मा हँसते-हँसते बोलती थी, देखो, गुस्से को क्या कहते हैं, क्रोध कहते हैं ना! क्रोध को भूत कहा जाता है। क्रोध आया माना अपने अंदर भूत प्रवेश हो गया। इसलिए कभी भूत नहीं बनना अर्थात् क्रोध नहीं करना। कुछ भी हो जाये लेकिन क्रोध नहीं करना।

कोई आवाज़ से बोलता था तो मम्मा उसको प्यार से समझाती थी, देखो, तुम आश्रम में रहते हो, ऊँची आवाज़ से नहीं बोलना चाहिए, बहुत धीमे से बोलना चाहिए। शान्ति से बोलना चाहिए। बहुत कम बोलना चाहिए, मीठा बोलना चाहिए। यदि किसी ने कोई बड़ी ग़लती भी की हो तो भी उनको कहती थी, 'इधर आओ, यह ठीक हुआ?' जो ग़लती करेगा भला वो कैसे कहेगा कि यह ठीक हुआ। तो मम्मा कहती थी, 'आगे के लिए ध्यान रखो, दुबारा ऐसी ग़लती नहीं होने देगा।' मम्मा कभी यह नहीं पूछती थी कि यह ग़लती क्यों हुई? जो हुआ सो हुआ लेकिन उसको प्यार से सुधारने की युक्ति और शक्ति प्रदान करती थी। इस प्रकार प्यार से, इशारे से उस व्यक्ति के हृदय का परिवर्तन कर देती थी।

मुझे साक्षात्कार तो नहीं होता था मगर मैं जब भी मम्मा को देखती थी तो मुझे लगता था कि यह लक्ष्मी ही बनेगी, यह सतयुग की महारानी है। मैं सेवा नहीं करती थी, शहजादी जैसे रहती थी। मम्मा मुझे मुसकराते हुए कहती थी, जाओ बच्ची, उनको ज्ञान समझाओ। सेवा करोगे तो मेवा मिलेगा। जाओ उनको बाबा का ज्ञान

सुनाओ। इस प्रकार मम्मा ने मुझे ज्ञान समझाना सिखाया, सेवा करना सिखाया।

मम्मा ही क्यों यज्ञमाता बनी?

मम्मा बहुत गुणवान थीं। वह गुप्त तपस्विनी थी। देखने में साधारण लगती थी लेकिन वह गुणों की खान थी। हमने तो जीवन में, मम्मा का मूड ऑफ होते कभी नहीं देखा। बाबा के हर वचन का पालन शीघ्र और संपूर्ण रूप से किया करती थी। मम्मा में पालना की शक्ति अद्भुत थी। मैं मम्मा को 'माँ', 'मम्मा' कहती थी और लौकिक माँ को 'जशोदा मैय्या' कहती थी। इतनी पालना की शक्ति और प्यार की शक्ति थी मम्मा में! मैं तो बचपन से ही बहुत लाड-प्यार से पली थी। मुझे अपने व्यक्तिगत काम ही करने नहीं आते थे। अपने बाल भी बनाने नहीं आते थे। मैं तो शहज़ादी जैसी थी, हर काम के लिए घर में नौकर रहते थे लेकिन मम्मा ने मुझे हर कार्य करना सिखाया। गाड़ी चलाना, ज्ञान समझाना, बर्तन माँजना आदि-आदि। इसका आधार मम्मा की स्नेह-शक्ति और पालना-शक्ति थी। इन्हीं श्रेष्ठ संस्कारों ने, मीठे स्वभाव ने एवं दैवी गुणों ने मम्मा को यज्ञमाता बनाया। हम मम्मा-बाबा के तख्तनशीन कैसे बनें? पहली बात है,

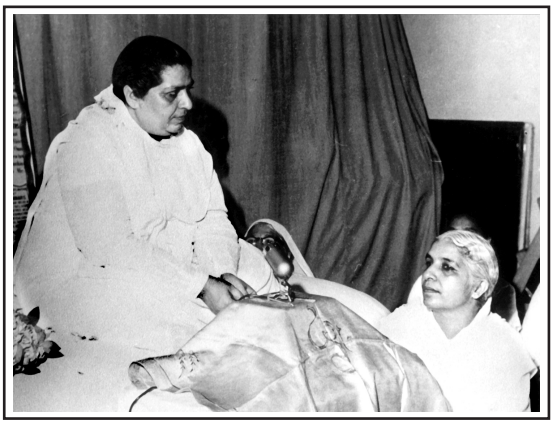

कोई भी ग़लती न करो। काम, क्रोध..आदि का अंश मात्र भी न हो, देह-अभिमान न हो, निरंतर अशरीरी स्थिति में रहो, दिल से बाबा को याद करो और सेवा करो। तब मम्मा-बाबा के तख्तनशीन बनेंगे।

मम्मा की तरफ से ब्राह्मण परिवार के लिए संदेश

मम्मा की तरफ से ब्राह्मण परिवार के लिए मेरा यही संदेश है कि मम्मा हमेशा कहती थी, क्रोध भूत है। बाबा के बच्चो, कुछ भी हो जाये परंतु क्रोध नहीं करना। अगर कोई नुकसान भी हो जाये तो उसको भी प्यार से समझाओ। ❖

मेरा बाबा, मेरा साथी

साक्षी मखीजा, उदयपुर

एक बार परीक्षा में मुझे एक प्रश्न का उत्तर नहीं आ रहा था। मैंने बाबा को कहा, आप हल कर दो तो मुझे उत्तर आ गया। मेरे पेपर भी अच्छे जाते हैं। मेरे घर में ब्रह्मा बाबा भी है, शिवबाबा भी है। जब मैं स्कूल जाती हूँ तो कहती हूँ, बाबा मेरे साथ चलो। ऑटो में जब बैठती हूँ तो बाबा को कहती हूँ, मेरे साथ बैठो। क्लास में बैठती हूँ तो कहती हूँ, बाबा मेरे साथ क्लास में बैठो। घर में सेवा करती हूँ तो कहती हूँ, बाबा मेरे साथ सेवा कराओ। शिवबाबा को ज्योतिबिन्दु रूप से याद करती हूँ। रात को बाबा को गुडनाइट करती हूँ, सोने से पहले बाबा को याद करती हूँ। सुबह उठती हूँ तो बाबा से ओमशान्ति कहती हूँ। जब भी कोई चिंता होती है तो मैं बाबा के ये बोल याद करती हूँ, बच्चे, तू चिंता मत कर, मैं बैठा हूँ।

स्थिरता सीखी मम्मा से

• दादी जानकी

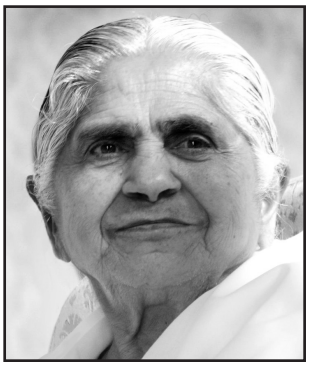

मम्मा मीठी कैसे बनी? यज्ञ में आई तब मम्मा थी 17 साल की। कितनी मीठी बन गई। कुमारी को हम माँ कहने लगे, फिर ओम राधे और फिर सरस्वती बन गई। यज्ञमाता फिर जगतमाता बन गई, फिर बनी लक्ष्मी। पुष्पशान्ता दादी को मम्मा से लक्ष्मी का साक्षात्कार हुआ। उस रूप को देख दादी पुष्पशान्ता समर्पित हो गई। मम्मा की बातें दिल में छपी पड़ी हैं। जब समर्पण हुई, धक से हुई।

मैं तो आई थी मम्मा के पास रहने के लिए लेकिन रख दिया बच्चों के साथ। बेबी भवन में मुझे रखा, 40 बच्चे संभाल के लिए दिये। एक रात दस बजे देखा, सभी दादियाँ मम्मा से रूहरिहान कर रही थीं। मैंने मम्मा से कहा, मुझे बेबी भवन में क्यों रखा, अपने पास क्यों नहीं? मम्मा ने कहा, तुम जनक हो ना, यह क्यों कहा, मुझे यहाँ क्यों रखा? मम्मा ने मुझे मेरा स्वमान याद कराया। डेढ़ साल बच्चों के साथ रही, बहुत उन्नति हुई। मम्मा ने ही सबसे पहले मुझे जनक कहा। जब यज्ञ में आई थी तब लौकिक घर की एक शॉल मेरे पास थी। फिर मैंने लौकिक घर वाली शॉल उतार फेंकी। आज मेरा परिचय देते हैं कि मोस्ट स्टेबल माइन्ड इन द वर्ल्ड (संसार में स्थिरतम मन वाली) है। यह मम्मा से सीखा है। मैंने मम्मा से पूछा था, आप इतनी निश्चिंत, गंभीर कैसे रहती हो, बोलती हो थोड़ा फिर भी यज्ञ में सब एक्यूरेट चलता है, मन ऐसे कैसे रहता है? बोली, मन मेरा बेबी है, इसे हँसाओ, दबाओ मत। संकल्प ऐसा हो जिसमें शान्ति भरी हो। मैंने भी सीख लिया। मम्मा 'बाबा' बोलेगी तो उस कहने में ही बड़ा रिगार्ड। जब बाबा कलिफ्टन पर मुरली सुनाता, टेलिफोन पर मम्मा सुनती। फिर हमें सुनाती तो हूबहू रिपीट कर देती। मम्मा को कभी नोट्स लेते नहीं देखा। सीधा मन में समा लेती थी। मम्मा चाहती थी कि बाबा मुझे 'मम्मा' ना कहे पर पहले-पहले बाबा ही 'मम्मा' कहता था। हमने हर पल मम्मा-बाबा से बहुत कुछ सीखा है।

बाबा ने मुरली में जगदम्बा की बहुत महिमा की है। बाबा ने कहा, मम्मा के पुरुषार्थ में अलबेलापन, रॉयल आलस्य नहीं था।

मम्मा में रूहानियत, ईश्वरीय स्नेह बहुत था। लगता नहीं था, कुछ कर रही है, करा रही है। मम्मा की हाज़री में सब खड़े हो जाते थे। दोपहर 12 बजे भोग लगाना है, मम्मा ठीक 12 बजे भंडारे में आई, एक मिनट भी लेट नहीं होगी क्योंकि बाबा ने कहा, 12 बजे भोजन का बेल लगना चाहिए। बाबा ने यह भी कहा, ला एंड आर्डर में सतयुग में राज्य चलता है तो मम्मा ने चलाया है इसलिए लक्ष्मी पहले, नारायण पीछे, नहीं तो नारायण का पहले नाम आना चाहिए। ब्रह्मा बाबा ने गुप्त रह मम्मा को आगे रखा ताकि शक्ति सेना आगे हो जाये।

मम्मा, समय का कदर बहुत करती थी, कभी भी मम्मा के मुख से कोई एक्स्ट्रा शब्द नहीं निकलेगा। कभी किसकी गलती किसको सुनाई नहीं होगी। कोई मम्मा को सुनाये तो उसे समाके, शिक्षा देके बात खत्म कर देती थी। ऐसी रॉयल्टी से हम एक-दो की पालना करें तो बहुत

उन्नति हो सकती है। अभी भी अगर कोई चाहे तो नम्बरवन में आ सकता है, पास्ट इज़ पास्ट। ज़रा-सा भी पीछे की बातों को न सोचे। पीछे की बात सोचना माना अपने को बांधकर रखना। नम्बरवन में आने वाला सबसे सीखता है। तो ले लो दुआयें माँ-बाप की, गठरी उतरे पाप की। कोई भी पुराना पाप रहा हुआ न हो तो नम्बरवन में आ सकेंगे।

मम्मा की बातों को इस झोली में अच्छी तरह से भरना फिर देखना, मैं कौन हूँ? मीठी-मीठी मम्मा का भक्ति में गायन है – जगत् अम्बा, काली, सरस्वती, वैष्णव देवी, शीतला माता, दुर्गा... ये सब स्वरूप मम्मा में देखे हैं। यज्ञ में जिस दिन से आई तो जैसा नाम था राधे वह प्रैक्टिकली सतयुगी राधे के संस्कार लेकर आई। यही फिर लक्ष्मी बन रही है तो वो सारे लक्षण उसमें देख लिये। फिर काली भी है, मम्मा के सामने जायेंगे तो पुराने संस्कार भस्म। बड़े-बड़े गृहस्थियों को, बड़ी उम्र वाले बुजुर्गों को भी मम्मा ने योगी बना दिया।

मम्मा की कभी कहीं आँख नहीं डूबी, न खाने में, न पहनने में। मम्मा ने कभी स्वेटर नहीं पहना, कभी जुराबें नहीं पहनी, इतनी ठण्डी होते भी मम्मा सदा त्यागी-तपस्वीमूर्त होकर रही। हम उस माँ के बच्चे हैं। जब मम्मा ने शरीर त्याग किया तो कइयों को मम्मा की लाइट का अनुभव होने लगा। भगत लोग उस माँ को पुकारते हैं, वह उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती है। बाबा कहते हैं, मम्मा के भी नाम रूप को न देखो लेकिन हम देखते हैं कि हमारे मम्मा-बाबा कैसे हैं? तीसरे नेत्र से देख रहे हैं और इन आंखों से हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जिनके दर्शन करने के लिए गला काटते हैं कि सिर्फ एक बार माँ का दर्शन हो जाये और हम उस माँ के बच्चे हैं, उनकी दृष्टि से पले हैं, उनके हाथों से खाया है। मम्मा ने जो किया वो सब देखा है और साथ में पार्ट बजाया है तो कितने भाग्यवान हैं!

बाबा मम्मा के साथ दादी जानकी तथा अन्य

मम्मा ने कभी आवाज़ से हँसा भी नहीं होगा। मम्मा के मुस्कराने में ही हमको समझ मिल जाती थी। जैसे गुलज़ार दादी सन्देश लेके आती है, बाबा ने मुस्कराया तो उस मुस्कराने में ही लेन-देन हो गयी। तो यह वरदान मम्मा डे पर मीठी माँ से सभी ले लो तो मम्मा समान सफलता मूर्त सो साक्षात्कार मूर्त बन सकेंगे। हमारे मस्तक में कोई देख ले तो वो विजयी बन जाये। अपना मस्तक देखो कैसा है? सन्तुष्टमणि भी मम्मा है ना, बाबा की मस्तकमणि है। सदा सन्तुष्ट रहना यह कितना भाग्यवान बनना है।

मम्मा भगवती माँ है। वो कहती है, सदा सन्तुष्ट रहो, शान्त रहो। एक दो को प्यार से देखो। जैसे मम्मा-बाबा ने हमको पालना दी है, ऐसे एक-दो को प्यार से देखो। मर्यादा पुरुषोत्तम बनने का यह संगमयुग है, मम्मा हर मर्यादा में एक्यूरेट चली। ज़रा-सी भी फैमिलीयरिटी में कभी मम्मा को नहीं देखा। मीठी-मीठी मम्मा की यही हम बच्चों के लिए कामना रही है कि बाबा के ये बच्चे गुलाब के फूल होवें। तो अपनी दृष्टि-वृत्ति ऐसी हो, रूहानियत में रह करके एकदम वरदानी माँ से वरदान ले लो। इस प्रकार जो वरदान मिलेगा वो सदा के लिए हो

जायेगा। किसी में कोई कमी-कमज़ोरी हो, स्वाहा हो जाए। दूसरे की कमी आज के बाद कभी नहीं देखेंगे। दूसरे की कमी को देखने से उसकी कमी मेरे में आ जायेगी इसलिए कभी यह भूल नहीं करना। किसी में, किसी भी प्रकार की कोई कमी है, तो उसे बलि चढ़ा दो। अगर कमी-कमज़ोरी रह गई तो वो शीतला, काली, दुर्गा, जगत अम्बा का अनुभव नहीं करेंगे। ज़िंदगी में कुछ भी बात आवे, हिलना नहीं है, स्थिर रहें, यह मम्मा ने हमें सिखाया है। मम्मा कौन है? हमको प्रैक्टिकल बनाने वाली भगवती माँ है। एलर्ट, एक्यूरेट, आलराउण्डर, एवररेडी बनने के लिए 'तो', 'तो' नहीं करना है लेकिन बनना है। ❖

मम्मा का गरिमायुक्त मुस्कराता चेहरा

बचपन से ही मैं धार्मिक स्वभाव की थी तथा ईश्वर से मिलने की उत्कंठा मेरे अंदर स्वत: जागृत होती रहती थी। माँ जगदम्बा पर विशेष आस्था थी। जून, 2008 में मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थानीय शाखा में आध्यात्मिक ज्ञान ग्रहण करने लगी। मैं एक ज्योतिबिन्दु आत्मा हूँ, मेरा घर परमधाम है, शान्ति मेरा स्वाभाविक गुण है – यह ज्ञात हुआ। धीरे-धीरे मेरी आस्था बढ़ने लगी। मेरा दृष्टिकोण बदलने लगा। आज समाज स्वार्थी बन चुका है, मात्र कुछ पाने की होड़ में लगा है, सच्ची शान्ति कहाँ प्राप्त होगी, समाज के लोगों को यह ज्ञात ही नहीं।

दूसरी ओर, संस्था की बहनों के हर्षित चेहरे, नि:स्वार्थ भावना और मीठे वचनों द्वारा नई-नई आत्माओं को ज्ञान देना, उनकी सेवा करना देख मुझे आश्चर्य लगा, क्या ऐसा भी होता है? जहाँ आज लोगों की भावनायें मर चुकी हैं, वे पशुवत् व्यवहार कर रहे हैं, वहीं ये बहनें नये समाज की स्थापना के लिए लोगों को खुशी प्रदान करने जैसे असंभव कार्य को संभव करने का भरपूर प्रयास कर रही हैं।

सात दिन के कोर्स के पूर्व मुझे मम्मा का जगदम्बा के रूप में साक्षात्कार हुआ था। माँ दुर्गा की मूर्ति के साथ मम्मा का अद्भुत चमकता और गरिमायुक्त मुस्कराता हुआ चेहरा नज़र आया जो मुझे अपनी ओर खींच रहा था। तब तक मैं मम्मा से अनभिज्ञ थी। इस घटना को मैं भूल चुकी थी परंतु मुरली क्लास के दौरान सेवाकेन्द्र पर मैंने वही गरिमायुक्त और दमकते चेहरे वाली मम्मा की तस्वीर देखी, मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। तभी से ईश्वरीय परिवार में मेरी आस्था और बढ़ गई। यहाँ की बहनों ने स्नेह रूपी जल से मेरे आत्मा रूपी बीज को ऐसा सींचा कि मैं धन्य हो गई।

सन् 2009 में मुझे आबू जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसी सुखद और उल्लासपूर्ण यात्रा पहली बार की। आबू पहुँचकर प्रात:काल से ही बाबा से मिलने की उत्कंठा बढ़ने लगी। जैसे ही बाबा की दृष्टि प्राप्त हुई, मेरा रोम-रोम पुलकित हो उठा। मन के कई संकल्प पूरे हुए। ऐसा प्रतीत हुआ कि कुछ पलों के लिए बाबा मेरा हाथ पकड़कर वतन ले गये हों, वहाँ मम्मा से भी साक्षात्कार हुआ परंतु यह अनुभव मात्र कुछ ही पलों का था। मैं शिवबाबा का धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने मुझे यह परम भाग्य प्रदान किया।

ब्रह्माकुमारी मोना, दुर्गापुर

'पत्र' संपादक के नाम

मार्च 2010 के ज्ञानामृत अंक में 'नारी की आध्यात्मिक श्रेष्ठता' तथा अन्य लेखकों के प्रभावी विचार पढ़े तो मैं संतुष्ट हुआ और मन में विचार आया कि ऐसे ईश्वरीय विचारों का प्रसार हिंदुस्तान के सभी राज्यों में होने की आवश्यकता है। इसलिए मैं नम्रतापूर्वक आपके और ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के पदाधिकारियों के सामने सुझाव रखता हूँ कि आप सभी राज्यों की राजभाषा अर्थात् मराठी, गुजराती, कन्नड़ आदि में ज्ञानामृत अंक प्रकाशित करें। मार्च 2010 अंक में ब्रह्माकुमार रमेश शाह का 'पुरुषोत्तम संगमयुग में ईश्वरीय चुनाव की पद्धति' लेख बहुत मननीय और विचार प्रवर्तक है।

– दत्तात्रय गणेश हाडये, मुंबई

अक्टूबर 2010 अंक में 'जीभ पर बंधन' पढ़कर बहुत अच्छा लगा। लेखक को कोटि-कोटि साधुवाद! लेखक ने खूब विचार मंथन कर अमृत से भी अमृत निकाला है। सटीक और सधी भाषा में जीभ के बंधन के सूक्ष्म कोणों को दर्शाया है। सत्य ही जीभ पर बंधन एक गहन आध्यात्मिक विषय है और तोपों, मिसाइलों के मुख को मोड़ने की ताकत रखता है। उन्हें खामोश भी कर सकता है। पुन: साधुवाद!

– डॉ.एस.एम.जैन, इंदौर

ज्ञानामृत पत्रिका में बड़े भावपूर्ण लेख प्रकाशित होते हैं। सितंबर 2010 अंक में 'संगठन की मजबूती' का अंतिम अनुच्छेद बहुत ही प्रेरणास्पद है – 'हम सब यज्ञ रक्षक बन परमात्म यज्ञ रूपी किले की एक-एक ईंट को मज़बूत बनायें। चूँकि हम पूर्वज आत्मायें हैं तो हमें बाप समान स्वयं को गुप्त रख औरों को आगे बढ़ाते जाना है व परमात्म प्रत्यक्षता के कार्य में श्रेष्ठ सहयोग देते जाना है। समय की अति समीपता व महत्त्व को महसूस कर तीव्र पुरुषार्थ कर स्वयं को तथा सर्व ईश्वरीय परिवार को उमंग-उत्साह में उड़ाते मंज़िल पर पहुँचाना है।' लेखक को कोटि-कोटि मुबारकबाद, आप आगे बढ़ें एवं बढ़ायें।

– ब्र.कु. गोविन्द भाई, पाटन (जबलपुर)

ज्ञानामृत का अक्टूबर 2010 का अंक ईश्वरीय ज्ञान के वरदानों से भरपूर है। 'संजय की कलम से' स्तंभ से कुंभकर्ण का वास्तविक परिचय मिला कि चेष्टाहीन, बुद्धिहीन, आलसी, निद्राप्रिय ही कुम्भकर्ण है। 'परिस्थिति में भी प्रगति' संपादकीय अभिनव उत्साह और प्रेरणा प्रदान करने वाला है। आपने सत्य ही लिखा है, टकराया और पूजनीय बन गया। यह वाक्य जीवन के संघर्ष में भी कर्मशील बनने का पाठ पढ़ाता है। आपने एक चिरंतन सत्य से अवगत कराया है कि अधूरी ही रहेगी दूसरे के बदलने की कामना। हमारी कितनी अनमोल ऊर्जा और शक्ति दूसरों को बदलने में अपव्यय हो जाती है लेकिन दूसरों को बदलने का परिणाम शून्य ही रहता है। परमआदरणीया दादी जानकी जी की अनमोल ईश्वरीय शिक्षायें अशांत विश्व को शांति के वरदानों से धन्य कर रही हैं।

– ब्र.कु. ललिता जोशी, कोदरिया (महू)

फरवरी 2011 माह की ज्ञानामृत में प्रकाशित लेख 'समायोजन की शक्ति' ने कई महीने से मन में चल रही दुविधा को शांत करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। सही में बाबा अपने बच्चों का पूरा ख्याल रखते हैं। उन्हें पता चल जाता है कि बच्चा क्यों परेशान है। तभी तो आगामी ज्ञानामृत में समस्या से निकलने का मार्ग दिखाते हैं। धन्य है शिवबाबा, आप और आपकी ईश्वरीय साधना!

– दीप्ती पटेल, कटनी

पुरुषोत्तम संगमयुग एवं भ्रष्टाचार का भुजंग

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

प्यारे शिवबाबा ने हम बच्चों को ज्ञान की अनेक बातें बताई हैं और उसी के अंतर्गत मुक्ति व जीवनमुक्ति के लिए जो पहला कदम सिखाया है, वह है पांच विकारों पर विजय। जैसे काम विकार को जीतने से पवित्र जीवन व्यवहार कर सकते हैं, ऐसे ही लोभ विकार पर जीत पाने से हम सच्चे-सच्चे ट्रस्टी बन कार्य कर सकते हैं।

दुनिया में भी सभी को यह बात मालूम है कि शरीर छूटने पर स्थूल भौतिक संपत्ति यहीं रह जाती है, किसी के साथ नहीं जाती है। इतिहास ने भी हमें यही सिखाया है। ग्रीस के महान सम्राट सिकंदर ने मरने से पहले कहा था कि मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर रखना ताकि सबको मालूम पड़े कि मैं अपने साथ यहाँ से कुछ लेकर नहीं जा रहा हूँ। मैंने फालतू में ही इतने युद्ध किये, इतना नरसंहार किया। टॉलस्टाय ने भी लिखा है कि मनुष्य को आखिर में कितनी जमीन चाहिए, जितनी कि उसे दफनाने के लिए काफी है।

शिवबाबा ने हमें बताया है कि जब से देवतायें वाममार्ग में गये हैं तब से विकारों का राज्य शुरू हुआ है और उसमें भी वर्तमान समय यह लोभ विकार दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

वर्तमान समय में भारत में भ्रष्टाचार की समस्या बहुत तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। भारत के आज़ाद होने से पहले भारत के राजनैतिक भविष्य के बारे में भविष्यवाणी करते हुए उस समय के इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री भ्राता विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि भारत को आज़ादी तो मिल जायेगी परंतु कार्य करने वाले इतनी सत्यता के आधार पर काम नहीं करेंगे और भ्रष्टाचार चारों ओर फैल जायेगा और सचमुच ऐसा ही हो रहा है। इसके मुख्य कई कारण हैं जिनमें से दो-तीन कारणों की हम यहाँ चर्चा करेंगे –

1. हरेक देश की सरकार का लक्ष्य होता है कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की स्थापना करना। सन् 1930 के बाद केनेसियन के अर्थशास्त्र के नियम और कागज़ के नोट प्रचलन में आने के कारण हरेक देश के राजनेताओं ने सरकार के खर्च को बढ़ा दिया। दुनिया के सभी देश लोककल्याण अर्थ खर्च करने के लिए नोट छापते रहे परिणामरूप लोगों के पास धन, संपत्ति में बहुत वृद्धि हो गई और भ्रष्टाचार बढ़ता रहा।

2. कई देशों की सरकारों ने समाजवाद और साम्यवाद की अर्थशास्त्र की नीति प्रमाण लोगों पर बहुत ज्यादा टैक्स लगा दिये। मिसाल के तौर पर भारत आज़ाद हुआ और उसके थोड़े समय बाद ही आयकर इतना बढ़ा दिया कि 100 रुपये की कमाई करने वाले को 97.5 रुपये टैक्स में भरना पड़ता था। इसलिए कालाबाजारी आदि शुरू हुई। इसी तरह शुरू में भारत सरकार ने हर छोटी-बड़ी चीज़ के उत्पादन के लिए लाइसेंस लेना अनिवार्य कर दिया इसलिए लोगों ने बिना लाइसेंस लिए ही कमाई करना शुरू कर दिया। साथ-साथ आबादी में भी वृद्धि होती गई, उस कारण लोगों ने जीवन-व्यवहार के लिए रिश्वत लेना-देना शुरू कर दिया। भारत सरकार ने मृत्यु कर (Estate Duty) इतना लगा दिया कि कोई व्यक्ति शरीर छोड़ता तो उसकी मिलकियत पर 85 मृत्यु कर भरना पड़ता और मृत्यु कर देने के लिए चीज़ें बेचने के कारण पूंजी

लाभ कर (Capital Gain Tax) भरना पड़ता। मद्रास के एक प्रसिद्ध केस में वारिसों को मृत्यु कर एवं पूंजी कर दोनों मिलाकर मरने वाले की मिलकियत का 107.5 टैक्स के रूप में भरना पड़ा अर्थात् वर्से में जहाँ वारिसों को 100 रुपये मिले थे, उन्हें 107.5 रुपये टैक्स के रूप में भरने पड़े। इसी कारण कालाबाजारी का कारोबार शुरू हुआ। पहले जहाँ भ्रष्टाचार के मामले में भारत का स्थान सारी दुनिया में 87 वां था, अब वह चौथे नंबर पर आ पहुँचा है। अर्थशास्त्री मानते हैं कि थोड़े समय में ही भारत चौथे नंबर से पहले नंबर पर पहुँच जायेगा। विदेश में भी भ्रष्टाचार के अनेक मिसाल हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, चाइनीज़ कंपनीज़ के पैसों से चुनाव में जीतकर राष्ट्रप्रमुख बने। जापान के प्रधानमंत्री को भ्रष्टाचार के आरोपों के कारण पद से इस्तीफा देना पड़ा। पाकिस्तान के वर्तमान राष्ट्रपति जरदारी को 10 राष्ट्रपति कहा जाता है अर्थात् उनके पास जाओ, 10 पैसा दो और कार्य सिद्ध करो। इजिप्त का तानाशाह (Dictator) होसनी मुबारक तथा लिबिआ के कर्नल गद्दाफी ने अरबों रुपये का धन रिश्वत द्वारा इकट्ठा किया। मैक्सिको के भूतपूर्व राष्ट्र प्रमुख जब चुनकर गद्दी पर आये, तब साधारण धनवान थे लेकिन बाद में जब उन्हें रिश्वत के कारण गद्दी का त्याग करना पड़ा तब विश्व में रइसों की सूची में वे चौथे नंबर पर थे। रशिया में साम्यवाद के कारण लोग काले धन को स्वीट्जरलैण्ड के बैंकों में रखने लगे और ऐसा माना जाता है कि स्वीट्जरलैण्ड में जमा धन में आगे का नंबर रशिया का है।

भारत में भी नेताओं से लेकर सरकारी नौकर तक सब भ्रष्ट होते हैं। किसी भी राज्य का बॉर्डर पार करने के समय ट्रक वालों को 100 रुपये देने पड़ते हैं। रेलवे की टिकट खरीदने में भी भ्रष्टाचार होता है तो स्कूल में प्रवेश पाने के समय पर भी पैसे देने पड़ते हैं। बूटपालिश करने वाले को भी रास्ते पर बैठने के लिए पुलिस को पैसा देना पड़ता है। बिहार की कोयले की खान और कर्नाटक की खनिज पदार्थ की खान वहाँ के नेताओं के लिए सोने के अंडे देने वाली मुर्गी बन गई हैं।

वर्तमान समय भारत में भ्रष्टाचार के 29,117 केस विभिन्न अदालतों में चल रहे हैं जिनमें से 3,228 मामलों की सुनवाई हो गई है और करीब 900 व्यक्तियों को सज़ा हुई है। बड़े छूट जाते हैं और छोटों को सज़ा हो जाती है। मिसाल के तौर पर एक चपरासी एक रुपये की रिश्वत लेते पकड़ा गया। उसे सरकारी नौकरी से दूर करने के लिए सरकार ने 14,000 रुपये से भी ज्यादा का खर्च किया। अब तक किसी भी नेता को भ्रष्टाचार के कारण सज़ा नहीं हुई है, यह हकीकत है।

अभी एक अखबार ने भ्रष्टाचार पर एक लेख लिखा जिसका शीर्षक रखा, 'गरीब भारत को लूटने वाले अमीर राजनैतिक लूटेरे'। राजनेताओं द्वारा 2G Spectrum में 1,76,000 करोड़ रुपये का घोटाला किया गया।

चूरहट लॉटरी कांड के अंतर्गत मध्य प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री अर्जुन सिंह ने करोड़ों रुपये का भ्रष्टाचार किया। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने जो ज़मीन कारगिल के युद्ध में मृतक सैनिकों की विधवाओं के लिए रिज़र्व रखी थी, उस पर 8 मंज़िले मकान के बदले 32 मंजिल की बड़ी बिल्डिंग बनवा दी और 7 करोड़ रुपये का फ्लैट 5-6 लाख रुपये में अपने रिश्तेदारों को दिया। ऐसे ही एक जमाने में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने 568 जमीन के प्लॉटस सौगात या कम दाम में देकर अरबों रुपये की कमाई की। तमिलनाडू के वर्तमान मुख्यमंत्री करुणानिधि के

सभी रिश्तेदार अरबपति हैं। अभी तो चुनाव आदि में मतदाताओं को लैपटाप, टीवी, मिक्सर आदि-आदि अनेक प्रकार की चीज़ें रिश्वत में दी जाती हैं। पूर्व सांसद बाबूभाई कटारा तो किसी भी बहन को अपनी पत्नी के रूप में विदेश ले जाकर स्थायी करने के लिए 21 लाख रुपये लेते थे। कहा जाता है कि वर्तमान भारत सरकार ने अपनी गद्दी संभालने के लिए अन्य सांसदों के वोट खरीदने के लिए प्रत्येक को 10 करोड़ रुपये दिये। न्यायतंत्र भी कई स्थानों पर कलंकित हो रहा है। शान्तिभूषण जो एक ज़माने में भारत के कानून मंत्री थे, ने आरोप लगाया है कि भारत के पूर्व आठ मुख्य न्यायाधीशों ने बहुत ही भ्रष्टाचार किया है। एक अखबार द्वारा चलाये गये स्टिंग ऑप्रेशन के तहत भारत के कई नामीगिरामी नेताओं को रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया है।

विश्व में 14 स्थान ऐसे हैं जहाँ पर लोगों ने भ्रष्टाचार से प्राप्त धन को रखा है जिसमें रशिया के लोगों ने 476 अरब डॉलर रखे हैं तथा ब्रिटेन के लोगों ने 390 अरब डॉलर रखे हैं। अमेरिकन सरकार ने स्वीटजरलैण्ड के बैंक पर भ्रष्टाचार से प्राप्त धन रखने तथा अमेरिका की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुँचाने के लिए केस किया था जिस पर अमेरिकन सरकार को 86 करोड़ डालर मुआवजे के रूप में मिले। कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत द्वारा जो भी घोटाले हुए, उससे तो सब परिचित ही हैं। भारत के बारे में एक लेखक ने लिखा है कि भारत घोटालों का गणतंत्र (Republic of Scams) है। ऐसी बहुत-सी बातें हैं जिनका वर्णन लिखूँ तो सारी ज्ञानामृत घोटालों के इतिहास से भर जाये।

हम जानते हैं कि इस प्रकार से धन के लोभ में आकर व्यक्ति, व्यक्ति को परेशान कर रहा है और ऐसी परिस्थिति में प्यारे शिवबाबा ने सिखाया है कि हमें अपने तन, मन, धन से ईश्वरीय सेवा कर स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना है और इस भ्रष्टाचार के भुजंग को खत्म करना है। कार्य तो बहुत विशाल है और उसमें सफलता प्राप्त करना बहुत कठिन है। विश्व परिवर्तन के समय पर सबका धन यहीं रहेगा, सब खाली हाथ परमधाम जायेंगे और धर्मराजपुरी में किये हुए पापकर्मों की सज़ा भोगेंगे। अन्ना हजारे साहेब जैसे लोकनेताओं ने उपवास करके सरकार को इन सब रिश्वतों के बारे में कानून बनाने के लिए कहा है। लोग हमें भी पूछते हैं कि आपका विश्व विद्यालय इस क्षेत्र में क्या कार्य करता है और इसलिए मैंने यह लेख लिखा है ताकि दैवी परिवार के बहन-भाइयों को इस समस्या का समाचार मिले और समाधान करने के संबंध में वे अपने सुझाव दे सकें। बहुत लोग ऐसा मानते हैं कि भ्रष्टाचार को दूर करने में ब्रह्माकुमारी संस्था का बहुत बड़ा योगदान हो सकता है

इस समस्या के बारे में एक विचार है कि ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा पवित्रता के बारे में, व्यसनमुक्ति के बारे में तो अभियान चलाया ही जाता है, ऐसे ही लोभ रूपी विकार और उसके द्वारा उत्पन्न होने वाली अनेक समस्याओं से मुक्त होने के लिए अभियान चलाने की ज़रूरत है। वह विधि क्या हो सकती है, कौन उस विधि को अपना सकता है, उसके बारे में विचार करना जरूरी है। उम्मीद है कि प्यारे शिव बाबा का कोई बच्चा इस अभियान के बारे में ठोस कदम उठाने के लिए प्रस्ताव रखेगा। इसी संदर्भ में प्यारे शिवबाबा ने मुझ आत्मा को निमित्त बनाकर 'पवित्र धन' किताब लिखवाई है, वह भी मददगार बन सकती है। ❖

जिनका संकल्प और कर्म महान है वही मास्टर सर्वशक्तिमान है।

पर्यावरण दिवस पर विशेष..

प्रकृति के ऋण की अदायगी

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

कई बार कई मनुष्यों को यह कहते हुए सुना जाता है कि हमने तो जीवन में कोई पाप नहीं किया। पाप और पुण्य की परिभाषा तो बहुत गहरी है। जानबूझकर ना किये जाने पर भी अनजाने में जो विकर्म हो जाते हैं, वे भी संसार और समाज की गिरावट का कारण तो बनते ही हैं।

ऑक्सीजन है प्रथम उपभोग

जब हम आत्मा इस संसार में आये थे तो नंगे अर्थात् अशरीरी अर्थात् बिना शरीर के आये थे। माँ के गर्भ से हमें शरीर मिला और फिर कुछ समय बाद पृथ्वी पर हमारा जीवन प्रारंभ हो गया। हमने प्रकृति की विभिन्न चीज़ों का उपभोग प्रारंभ कर दिया। शरीर धारण करने पर हमारा पहला उपभोग है ऑक्सीजन। जन्म से भी पहले हम ऑक्सीजन लेना और कार्बनडायऑक्साइड छोड़ना प्रारंभ कर देते हैं और अंतिम श्वास तक ये क्रियाएँ करते रहेंगे। ऑक्सीजन बंद माना जीवन समाप्त।

ऑक्सीजन के व्रती नहीं देखे

आज तक हमने निर्जला व्रत करने वाले अर्थात् बिना जल पिये, दिन गुज़ार देने वाले देखे और बिना भोजन किये (अन्न के व्रती) एक दिन, दो दिन या इससे भी अधिक दिन गुज़ार देने वाले देखे परंतु ऑक्सीजन का व्रत करने वाले कोई नहीं देखे। ऐसे नामी-गिरामी संतों के बारे में भी सुना जो बिना खाये जिन्दा हैं परंतु बिना ऑक्सीजन जिन्दा रहने वालों का कोई परिचय आज तक नहीं मिला।

क्या यह ऋण नहीं है

अत: सर्वमान्य सच्चाई यह है कि हममें से प्रत्येक व्यक्ति इस वायुमण्डल में कार्बनडायऑक्साइड को बढ़ाने और ऑक्सीजन को घटाने का ज़िम्मेवार है ही। वायुमण्डल में तेज़ी से घटती ऑक्सीजन और तेज़ी से बढ़ती कार्बन के लिए कोई एक ज़िम्मेवार नहीं है परंतु कोई एक भी इसकी ज़िम्मेवारी से छुटा हुआ भी नहीं है। पिछले पाँच हज़ार वर्षों से, अनेक जन्म-पुनर्जन्म लेकर हम इस धरती के वायुमण्डल को दूषित करते आये हैं तो क्या यह हमारा पापकर्म नहीं है? क्या यह हमारे पर प्रकृति का ऋण नहीं है? क्या इस ऋण से मुक्त होने के लिए हमने आज तक कुछ किया है?

लेने में दूसरों की चिन्ता नहीं तो देने में क्यों?

ऑक्सीजन का एकमात्र स्रोत हैं पेड़। क्या हमने पेड़ लगाए? क्या इतने पेड़ लगाए और पाल-पोसकर बड़े किये जो हमारे द्वारा फैलाए गए प्रदूषण की भरपाई हो सके। हम किसी दूसरे की तरफ अंगुली उठाकर यह नहीं कह सकते कि इसने भी तो नहीं किया। क्या दूसरे की तरफ अंगुली उठा देने मात्र से हमारा ऋण उतर जायेगा? और जब श्वास लेते हैं तब तो चिन्ता नहीं करते कि दूसरे को भी ठीक सांस आ रही है या नहीं। उस समय तो केवल अपने से सरोकार होता है तो जब ऋण उतारने की बात आये तब भी तो अपने को ही देखना है ना।

खुल गई हैं ऑक्सीजन की दुकानें

कुछ समय पहले एक वनअधिकारी ने बातचीत के दौरान बताया कि संसार में मनुष्य के सुखपूर्वक जीवनयापन के लिए वनों की मात्रा 33 होनी चाहिए। उन्होंने

यह भी बताया कि वर्तमान समय भले ही कागज़ों में 14 जंगल दिखाये जा रहे हैं पर वास्तव में 11 ही हैं। उन्होंने आगे यह भी कहा कि यदि जंगल का प्रतिशत घटकर केवल 9 रह गया तो मानव जाति की श्वास घुटने लगेगी। अभी भी रात्रि के समय वायुमण्डल में ऑक्सीजन 2 रह जाती है। इस कारण श्वास से संबंधित रोगियों को रात में भारी तकलीफें होती हैं। अधिकतर की मृत्यु भी रात्रि में ही होती है। कई देशों में तो ऐसी दुकानें भी खुल गई हैं जहाँ पेमेन्ट देकर ऑक्सीजन ग्रहण करने की सुविधा उपलब्ध है। अमीर आदमी तो शायद यह कर भी ले पर बेचारे गरीबों का क्या होगा? रोटी-पानी की मार झेल रहे गरीबों को यदि ऑक्सीजन की मार भी झेलनी पड़े तो कितने पल वे जी पायेंगे, यह सोचने की बात है?

सबै भूमि गोपाल की

ऑक्सीजन तो जीवन की प्रथम आवश्यकता है, इसके साथ-साथ, शरीर की हर आवश्यकता प्रकृति ही तो पूर्ण करती है। हम जिस ज़मीन के टुकड़े पर अपना हक जमाए हुए हैं, क्या वास्तव में वो हमारा है? हमारा कोई पूर्वज जब धरती पर आया था बहुतकाल पहले तब यह धरती खाली पड़ी थी। उसने एक भाग को स्वेच्छा से जोतना शुरू किया, मालिकाना हक जैसी कोई बात उस समय थी ही नहीं। जोतते-जोतते वह उस भूभाग का मालिक कहलाने लगा और उसकी आने वाली पीढ़ियों में वह भूभाग बंटता चला गया। कोई कह सकता है कि मुझे तो पूर्वजों से कुछ नहीं मिला, ज़मीन अपनी खून-पसीने की कमाई से खरीदी है। हम कहीं से भी खरीदें, खरीद लेने मात्र से हम मालिक तो नहीं हो गए, असली मालिक तो प्रकृति ही है या प्रकृतिपति है। इसलिए कहा गया है, 'सबै भूमि गोपाल की'।

प्रकृति ने कभी बिल नहीं भेजा

प्रकृति केवल ज़मीन ही नहीं देती, आगे भी बहुत सारी उदारता दिखाती है। आज खाद, पानी, बिजाई आदि की अनेक वैज्ञानिक पद्धतियाँ निकल आई हैं परंतु ये खर्चीली पद्धतियाँ सब तक कहाँ पहुँच पाती हैं। इसलिए पूर्वकाल की तरह प्रकृति आज भी बिना किसी बिल की अदायगी लिए अन्न उगने से लेकर फसल के घर पहुँचने तक बहुत कार्य करती है। बरसात का प्राकृतिक जल बिना किसी माप और गिनती के गिरता है। हम बीज बो देते हैं। अगर यही जल हमें किसी नहर, कुएँ से लेना होता तो कितना बिल देते? देते कि नहीं देते? फसल को धूप चाहिए, प्राकृतिक ऊर्जा का स्त्रोत अपनी किरणों से अनाज को पकाता है। धूप के सहयोग से ही हरे पत्ते पौधे के लिए भोजन तैयार करते हैं। क्या कभी इसका बिल प्रकृति की तरफ से आया? नहीं ना! फसल को हवा भी चाहिए। पकने पर, छिलकों और दानों को अलग-अलग करने के लिए हवा का सहयोग लिया जाता है। तो क्या हमने हवा को कोई अदायगी की? नहीं ना!

'मेरी-मेरी' की भाषा अच्छी नहीं लगती

अब प्रकृति का इतना ऋण लेकर कोई कहता है, यह फसल तो मेरी है, मैं इसका मालिक हूँ, मनचाहे ढंग से इसका इस्तेमाल करूँगा तो प्रकृति को भी यह 'मेरी-मेरी' की भाषा अच्छी नहीं लगती। उसने बिल इसलिए नहीं दिया था कि अनाज के इन दानों में से आप पक्षी-जानवरों, गाय-घोड़ों, मंदिर-गऊशाला आदि का हिस्सा अवश्य निकालेंगे। अपने पालतू जानवरों को और घर के सभी छोटे और बड़े बुजुर्गों को प्यार से खिलाएँगे। उन सबकी ज़रूरतों को पूरी करेंगे जो इस फसल को ढोने, चुनने, बिनने, काटने आदि में मददगार बने थे। पर जब प्रकृति ने देखा कि मेरे उपकार के प्रति कृतज्ञता जताने के कर्त्तव्य से

बेखबर मानव इस गाढ़ी कमाई को शराब, सिगरेट, व्यसनों, मुकदमों, फैशन में गंवा रहा है; ज़मीन पर भाई, भाई का खून बहा रहा है और ईर्ष्या-द्वेष से ज़मीन तप रही है तो उसने भी अपने प्राकृतिक संसाधनों को देने से हाथ खींच लिया। इसलिए आज समय पर ना तो बरसात होती है, न धूप निकलती है, और ही हम अनावृष्टि, अतिवृष्टि और ओलों की मार झेल रहे हैं।

राजयोग द्वारा मनाइये प्रकृति को

इस नाराज़ प्रकृति को खुश किये बिना हमारा सुख से जीना संभव नहीं है। कैसे करें इसे खुश? राजयोग द्वारा। राजयोग अभ्यास से हम मन के शुद्ध प्रकंपन प्रकृति को देते हैं। भगवान शिव प्रकृतिपति हैं। उनसे मन-बुद्धि को जोड़कर, उनसे प्राप्त होने वाली शक्तियों को, अपने संकल्पों द्वारा प्रकृति के पाँचों तत्वों पर प्रवाहित करते हैं। प्रकंपन फैलाना एक सूक्ष्म प्रक्रिया है। इस द्वारा वायुमण्डल में पवित्रता की मात्रा बढ़ जाती है। जैसे प्रकाश के बढ़ने के साथ-साथ अंधकार दूर होता जाता है इसी प्रकार पवित्रता का प्रतिशत बढ़ने से वातावरण की गंदगी स्वत: दूर होती जाती है। बहुत सारे हानिकारक कीटों और विषाणुओं की उत्पत्ति गंदे वातावरण में होती है। हमारे शुद्ध संकल्पों के शुद्ध प्रकंपनों के बढ़ने से वातावरण स्वच्छ हो जाता है और इस प्रकार के विषैले जीव पनप ही नहीं पाते हैं।

प्रकृति को हमारे शुद्ध प्रकंपनों का सहयोग चाहिए। सतयुगी देवी-देवताओं के प्रकंपन अति शुद्ध थे, तब विषाणु नहीं थे, प्रकृति सतोगुणी थी इसलिए हर रूप में मानव की सहयोगी थी। यदि हम अपने विचारों को देवताई बना लें तो प्रकृति आज भी हमारी सेवा में तत्पर रहने को तैयार है।

पर्यावरण सुरक्षा

बलराज कुन्डू, हिसार

आज खतरों से घिरी हमारी जान है
इन खतरों का कारण स्वयं इंसान है
पर्यावरण हुआ दूषित जो विनाश की निशानी है
जानबूझकर खेल रहे जो खेल बड़ा शैतानी है
मानव ना मान रहा किसी की बात, बड़ा अभिमानी है
जो यों रहा बिगड़ता खेल, जीवन की खत्म कहानी है
रखो पर्यावरण को साफ इसी में शान है
आज खतरों से घिरी.....

ध्वनि, मृदा, वायु और पानी
पर्यावरण की ये चार निशानी
यदि सुरक्षित ये ना बची, बचे ना कोई ज़िंदगानी
जो करता इनकी सुरक्षा वो व्यक्ति महान है
आज खतरों से घिरी.....

लाउड स्पीकर और होर्न से बहरे कान हुए
ज़हर बन गई मृदा, केंचुए कुर्बान हुए
वायु हुई प्रदूषित जो पेड़ कटान हुए
ना बची पवित्र नदियाँ, जल बिन सब वीरान है
आज खतरों से घिरी.....

बढ़ती हुई आबादी प्रदूषण का है कारण
ऐशोआराम का जीवन सबने किया है धारण
रखो पर्यावरण को साफ यह है कष्ट निवारण
लगाओ ज्यादा पेड़ तो सुखी इंसान है
आज खतरों से घिरी.....

धुआँ, कचरा, रसायन और शौच खुले में ना जाओ
बनाकर रासायनिक हथियार किसी का ना खून बहाओ
रखकर आस-पड़ोस को साफ खुदा को पास बुलाओ
'कुन्डू' सारे कर लो प्रण तो सुखी जहान है
आज खतरों से घिरी.....

मेरा नाम रखा 'अशोक पिल्लर'

• ब्रह्माकुमार अशोक 'पिल्लर', लुधियाना

सन् 1963 में मम्मा अंबाला में आई। हम उन्हें निमंत्रण देकर लुधियाना में लाये। लुधियाना में उस समय मिट्ठू दादी थे। मम्मा का लुधियाना में ज़ोरदार स्वागत हुआ। बहुत भाई-बहनों की लंबी कतार लगी। सबके हाथों में फूल थे। सभी मम्मा से दृष्टि लेते गये तथा फूल देते गए। उनकी दृष्टि जब मुझ पर पड़ी तो लगा कि अद्भुत दृष्टि है, कोई महान हस्ती है। असली माँ हमारी यही है। उनका चलना तथा बातचीत का ढंग बिल्कुल फरिश्तों जैसा रॉयल था। मम्मा की गोद में जाने का मौका मिला। सुबह क्लास में गोद में जाते थे। हमारी आत्मिक स्थिति होती थी। गोद में जाकर ऐसा लगा, मम्मा हमारी सच्ची माँ है, गोद ऐसी थी जैसे रूई की बनी हो। योगबल से उनका शरीर कोमल रूई जैसा हो गया था।

एक दिन क्लास में चर्चा चली, मम्मा ने प्रश्न पूछा कि बच्चे बाप पर निछावर होते हैं या बाप बच्चों पर? क्लास के भाई-बहनों में से किसी ने कहा, बाप पहले निछावर होता है। मैंने कहा, पहले हम बच्चे निछावर होते हैं, पहले हम बाप को अपना बच्चा बनाकर उन पर कुर्बान जाते हैं। मम्मा ने दो-तीन बार घुमा-फिराकर पूछा, आप कैसे बच्चा बनायेंगे, कैसे निछावर होंगे? फिर भी मैंने दृढ़ता से कहा, हम निछावर होंगे। फिर मम्मा ने कहा, बच्चे का निश्चय बड़ा पक्का है, आज से अशोक कुमार की जगह इनका नाम हुआ 'अशोक पिल्लर', ऐसा वरदान मुझे दिया। उन्हीं वरदानों को लेकर हम आज तक चले आये हैं।

लुधियाना के बाद मम्मा जालंधर, पटियाला, नाभा में गये। हम भी पीछे-पीछे जाते रहे उनसे ज्ञानामृत पीने के लिए। मम्मा ने पूछा, मैं जहाँ जाती हूँ, आप वहीं आ जाते हो, आपको समय और छुट्टियाँ मिल जाती हैं? मैंने कहा, जी, मिल जाती हैं। मैं प्राइवेट सर्विस करता था। मेरा मालिक मेरे से और ज्ञान से बहुत प्रभावित था। उसने खुद ही कहा, मेरी कार लेकर जालंधर जाओ मम्मा से मिलने। उसने एक बार जगदीश भाई का लेक्चर सुना था, उसका उस पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा था। मेरे व्यवहार, कर्म और चरित्र से भी बहुत खुश था।

मम्मा के शरीर छोड़ने के 15 दिन पहले हम मधुबन गए, उनसे मिले, उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इतनी तकलीफ होते भी उनका चेहरा बहुत हर्षित था। लगता ही नहीं था कि कोई बीमारी है। उन्होंने हम सबको दृष्टि तथा टोली भी दी। ऐसी मीठी-प्यारी अलौकिक माँ जगदम्बा की ये मीठी प्यारी स्मृतियाँ आत्मा को, उनसे मिलन मनाने जैसा अनुभव कराती हैं। ❖

अति महत्वपूर्ण सूचना

किसी देश की मुद्रा किसी संस्था या व्यक्ति के प्रचार का माध्यम कदापि नहीं हो सकती। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का कोई भी सदस्य (बी.के.) कृपया भारतीय पत्रमुद्रा (नोटों) पर किसी भी प्रकार की सील लगाकर या लेखन सामग्री द्वारा या अन्य किसी भी प्रकार के चिन्ह द्वारा ज्ञान के प्रचार का कुप्रयास न करे। यह कृत्य राष्ट्रहित में निंदनीय और अशोभनीय है तथा भारतीय पत्रमुद्रा के निरूपण किये जाने के लिए दंडनीय भी है।

गतांक से आगे...

अथाह ज्ञान-भण्डार थे भ्राता जगदीश जी

ब्रह्माकुमारी प्रभा बहन, पीतमपुरा सेवाकेन्द्र (शक्तिनगर, दिल्ली) की निमित्त संचालिका हैं। आपने भ्राता जगदीश चन्द्र जी के साथ 18 सालों तक शक्तिनगर सेवाकेन्द्र में रहकर ईश्वरीय सेवाएँ की और बहुत कुछ सीखने का सुअवसर प्राप्त किया। प्रस्तुत कर रही हैं आप भ्राता जी के महान प्रेरणादायी जीवन के संस्मरण।

श्रेष्ठ स्मृति

बाबा के कमरे को साफ रखवाना, अलमारियाँ सेट करवाना, बाबा की सीडी, किताबें, कैसेट्स, यज्ञ कारोबार की फाइलें तरीके से रखवाना – ये सब कार्य वे खुद करवाते थे। किस फाइल में क्या मैटर है, कौन-सी फाइल, कौन-सी अलमारी में, किस खाने में, किस नंबर पर है, उन्हें सब याद रहता था। उनकी स्मरण शक्ति बहुत अच्छी थी। वे दवाई कभी नहीं लेते थे। जब बाबा ने उन्हें कहा कि ये कलियुग के रंग-बिरंगे ड्राई फ्रूटस हैं तो उन्होंने दवाई लेनी शुरू की। साठ वर्ष की उम्र तक उन्होंने कभी दवाई नहीं ली।

उनकी हर बात-बात में बात

भाई साहब कहते थे, सेन्टर में क्लास करने आने वाले भाई-बहनों से पहले हमें क्लास रूम में योग में बैठ जाना चाहिये। जैसे ब्रह्मा बाबा, मम्मा सबका ख्याल रखते थे, वैसे सभी का ख्याल रखो। परिवारों में रहने वालों को कई परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है, इसलिए उनका उमंग-उत्साह बढ़ाते रहना है और अलौकिक पालना देते रहना है। भले ही तोशा एक ही हो, उसके भी तीन-चार टुकड़े बनाकर भाई-बहनों को दे दो। बाबा का वही एक टुकड़ा उनमें शक्ति भर देगा। जब हम बहनें फल काटकर देती थी तो समझाते थे कि संतरे का अर्थ है संग तारे। जैसे संतरे की फांकें आपस में प्यार से मिलकर रहती हैं, ऐसे ही आप भी मिलजुलकर, स्वभाव-संस्कार मिलाकर रहो। जैसे खीर में चावल घुल जाते हैं, ऐसे घुल-मिलकर रहो। अनार के दाने भी आपस में धक्का-मुक्की नहीं करते, मिलकर रहते हैं, इसलिए ही कहा जाता है कि एक अनार सौ बीमारों को ठीक कर देता है। इस प्रकार, हमें उनसे हर समय ज्ञान-रत्न ही प्राप्त होते रहते थे। केले के ऊपर भी समझानी मिलती

थी कि आये अकेले, जाना अकेले, रहना भी अकेले, याद भी अकेले होकर, एक बाप को ही करना है।

कदम-कदम पर सावधान

वे कहते थे कि चाहे सफाई का कार्य किया या कपड़े धुलाई किये, भोजन बनाने का कार्य किया या ऑफिस कार्य किया लेकिन इसके बाद इधर-उधर न बैठो, सीधा बाबा के कमरे में जाओ, वहीं जाकर रिलेक्स हो जाओ। एक तो आप लोग ज्ञान में लेट आये हो, मम्मा-बाबा को भी नहीं देखा और अभी भी टाइम वेस्ट करते हो। क्या लक्ष्य

रखा है अपने जीवन का? चारों सब्जेक्टस में अच्छे नंबर लेने हैं या नहीं, इस प्रकार कदम-कदम पर सावधानी देते थे। आज मुझे हलकापन महसूस होता है कि भाई साहब की शिक्षानुसार हम टाइम वेस्ट बिल्कुल नहीं करते। समय, श्वास, शक्तियाँ सब सफल करके औरों के भी सफल करा रहे हैं।

निर्भय बनाते थे

भाई साहब शुरू से ही हम लोगों को बताते थे कि रात को क्या बोलकर सोना है, मेरा बाबा, मीठा बाबा, सिकीलधा, लाडला बाबा, दयालु बाबा, कृपालु बाबा। वे कहते थे, शिवबाबा का हाथ कभी नहीं छोड़ना, वे आपका बेड़ा पार लगायेंगे। वे दया के भण्डार हैं। रोज रात को सोने से पहले हम सभी को यह पाठ पक्का करवाते थे। कहते थे, हरेक के जीवन में परीक्षायें आती हैं लेकिन हमें ईश्वरीय जीवन में, बाबा में, बाबा के कर्त्तव्य में संशय नहीं लाना चाहिये, जीवन में डरो नहीं, निडर बनकर रहो। शरीर नाशवान है, आत्मा अमर है। एक दिन तो यह शरीर छूटना ही है, घबराते क्यों हो? अगर परीक्षायें नहीं आयेंगी तो पक्के कैसे होंगे? ये हमें पकाने के लिए आती हैं। जो निश्चय वाला होता है, उसकी सदा विजय होती है, निश्चय वाला सदा निश्चिन्त रहता है कि बाबा बैठा है।

मुरली की कीमत

वे हमें मुरली का महत्त्व समझाते थे। जब मुरली फोटोस्टेट करवाते थे तो पूछते थे कि कितने में कराई। मान लीजिए, हम कहते थे, एक रुपये में एक। फिर समझाते थे, देखो, मधुबन में इस मुरली को सुनने के लिए कितने सारे भाई-बहनें आये हुए थे। यदि एक आत्मा के मधुबन आने-जाने में 2,000 रुपये खर्च हुए और 10,000 भाई-बहनें आये हुए थे तो 2,000 10,000 करो, कुल हुआ 2 करोड़ रुपये। फिर कहते थे, जो डबल विदेशी भाई-बहनें आये मुरली सुनने, उनके खर्च का हिसाब निकालो। यदि एक रशियन को 30,000 रु. खर्च करने पड़े तो 100 रशियन के हो गये 30 लाख रु.। अमेरिका वाले एक-एक को 60,000 रु., कनाडा वाले को 62,000 रु. खर्च करने पड़े। इस प्रकार कुल खर्च के जोड़ की सूची बनवाते थे। हम सब हैरान हो जाते थे कि मुरली की कीमत करोड़ों में पहुँच गई। फिर समझाते थे कि देखो, बाबा का एक-एक महावाक्य एक लाख के बराबर है या नहीं।

सेवा के खाते का चित्रण

कहते थे, भोग भी बनाओ तो एक्यूरेट बनाओ, बचना नहीं चाहिये। जब बाबा के बच्चे बढ़ेंगे तब आपको 500 के लिए भी बनाना पड़ेगा। भोजन का हिसाब भी एकदम ठीक हो, नहीं तो बोझा चढ़ता है। कभी यह भी पूछते थे कि आप शिवबाबा की सेवा कर रही हैं या सेवा ले रही हैं। हम सब कहते थे कि सेवा करने के लिए ही तो समर्पित हुये हैं। **कहते थे, अपनी डायरी में लिखो कि आज मैंने क्या-क्या खाया, उसका मार्केट में मूल्य क्या है, चाय का, भोजन का। फिर लिखो, हम एक कमरे में दो बहनें रहती हैं, आज की दुनिया में एक कमरे का किराया कितना होता है, फिर बिजली, पानी भी प्रयोग करते हैं। पढ़ाई-लिखाई पर लौकिक में कितना खर्च होता है, हम लोगों को शिवबाबा फ्री में पढ़ाता है, शक्तियाँ भरता है, दिव्यबुद्धि का वरदान देता है। इसकी भेंट में लिखो, सारा दिन क्या-क्या सेवा कर रही हो। इतना स्पष्ट चित्रण करते थे जो हमें अहसास हो जाता था कि संगमयुग पर बाप ऑबिडियेन्ट सर्वेन्ट बनकर हमारी कितनी निष्काम भाव से सेवा कर रहे हैं।** जरूरत है कि हम उस परमपिता की सेवाओं को दिल से स्वीकार करें, उसकी श्रीमत अनुसार जीवन को श्रेष्ठ बनायें तो जरूर बेहद की जागीर मिलेगी। ❖

क्रोध पर विजय की ओर

• ब्रह्माकुमार शरद कुमार, दिल्ली (चांदनी चौक)

वह सुबह आज भी मुझे अच्छी तरह याद है जब किसी कारणवश मेरी नींद उचट गई थी। मैंने सोने की बहुत कोशिश की किन्तु दोबारा नींद नहीं आई। मैं सोचने लगा, क्या करूँ। घर के सब लोग सोये हुए थे। उन्हें जगाना उचित नहीं समझा। और कुछ नहीं सूझा तो टीवी चला लिया और रिमोट लेकर चैनल पलटने लगा। अचानक एक चैनल पर मैं रुका और उस पर चल रहे कार्यक्रम को देखने लगा। वह ब्रह्माकुमारीज़ का कार्यक्रम था। दो बहनें परस्पर आध्यात्मिक चर्चा कर रही थीं। कार्यक्रम अच्छा लगा। मैंने उसे पूरा देखा। फिर तैयार हो, नाश्ता कर मैं दुकान के लिए चल दिया।

रास्ते में मैं सुबह टीवी पर देखे गए कार्यक्रम के बारे में, उसमें चर्चित बातों का चिन्तन करने लगा। तब मेरे मन में आया कि ब्रह्माकुमारीज़ का साहित्य पढ़ना चाहिए। दुकान के रास्ते में, चांदनी चौक में इस संस्था का एक सेन्टर है। मैं वहाँ गया, निमित्त संचालिका बहन ने मुझे साप्ताहिक पाठ्यक्रम करने के लिए कहा। उसी दिन से मेरी पढ़ाई शुरू हो गई – जीवन परिवर्तन करने की क्षमता रखने वाली पढ़ाई। मैं नियमित सेन्टर जाने लगा।

क्रोध आज के युग की एक बड़ी चुनौती है। क्रोध हमारे लौकिक परिवार के लिए भी एक बड़ी चुनौती थी। यूनिवर्सिटी की उच्चतम डिग्री लेने के उपरांत भी और लगभग आधी शताब्दी जितनी उम्र बीत जाने के बावजूद भी मेरे लिए क्रोध की चुनौती ज्यों की त्यों बनी हुई थी। मुझमें इस चुनौती को दूर करने की तीव्र इच्छा थी पर तरीका समझ नहीं आ रहा था। हर बार मेरा अभिमान आगे अड़ जाता था। मैं सोचता था कि मैं क्रोधी के सामने क्यों झुकूँ? मैं क्यों चुप रहूँ? मेरी क्या ग़लती है, मैं तो सही हूँ...।

क्रोध रूपी शेर का मुकाबला न करें

निमित्त बहन ने क्रोध की चुनौती को दूर भगाने के लिए एक कहानी सुनाई जो अन्य प्रसंग में मैंने पहले भी सुनी हुई थी। दो दोस्त जंगल की तरफ से जा रहे थे। अचानक उन्हें एक शेर अपनी ओर आता नज़र आया। एक को पेड़ पर चढ़ना आता था, वो चढ़गया। दूसरे को नहीं आता था पर उसने सुन रखा था कि शेर मरे हुए को नहीं खाता, वह सांस रोककर मुर्दे की तरह ज़मीन पर लेट गया। शेर ने ज़मीन पर लेटे दोस्त को सूंघा और मरा हुआ समझकर आगे बढ़ गया। निमित्त बहन ने बताया कि क्रोध भी एक शेर के समान है। हमें इसका मुकाबला कभी नहीं करना चाहिए। हम इसका मुकाबला कभी कर भी नहीं सकते हैं। हमें इस शेर के सामने मुर्दे के समान व्यवहार करना चाहिए अर्थात् क्रोधी के सामने चुप रहना चाहिए, कुछ भी नहीं बोलना चाहिए। मानो कुछ सुना ही नहीं, मानो कुछ देखा ही नहीं, मानो कुछ हुआ ही नहीं।

सहनशील बन, पर-क्रोध को सहन करें

मुरली क्लास तथा ब्रह्मा कुमारीज़ के टीवी कार्यक्रमों में बतलाई गई तकनीकों के निरंतर अभ्यास से मैंने स्वयं को परिवर्तित करना शुरू किया। क्रोध की चुनौती खत्म करने का लक्ष्य मेरे मन में बैठ गया। मुझे समझ आ गया था कि कमी कहाँ थी, ग़लती किसकी थी। कमी भी मुझमें थी और ग़लती भी मेरी थी। **मैं दूसरों के क्रोध को खत्म करने के लिए अपने क्रोध का प्रयोग कर रहा था अर्थात् मिसाइल का जवाब मिसाइल से दे रहा था।**

यह नीति न तो कभी कारगर सिद्ध हुई है और न होगी। सही तो यह है कि क्रोधी से न कभी उलझें, न कभी उसका सामना करें। क्रोधी अपना विवेक खो देता है। उसके साथ हम अपना विवेक न खोएँ, अपनी मानसिक स्थिरता बनाये रखें। सहनशील बन दूसरों के क्रोध को सहन करें। अभिमानरहित रहें, इससे बड़े-बड़े झगड़े, बड़ी-बड़ी चुनौतियाँ टल जाती हैं। उपरोक्त छोटी-सी शिक्षाप्रद कहानी ने लौकिक परिवार में सुख और शान्ति का वातावरण स्थापित कर दिया।

नि:संदेह क्रोध पर नियंत्रण करना और क्रोधी के सामने शान्त रहना बहुत कठिन कार्य है किंतु अभ्यास से जैसे अन्य कठिन से कठिन कार्य संपन्न हो जाते हैं उसी तरह अभ्यास से क्रोध पर भी विजय पाई जा सकती है और बहुत लोगों ने विजय पाई भी है। मैं भी इस राह पर चल पड़ा हूँ। यद्यपि यह तो नहीं कह सकता कि क्रोध पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है किन्तु इतना निश्चित तौर पर कह सकता हूँ कि जब से सेन्टर जाने लगा हूँ, इस राह पर बहुत आगे बढ़ गया हूँ। शुक्रिया बाबा, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया, आपने मुझे अपनी शरण में लिया। ❖

माँ जगत अम्बा

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी. (गुड़गाँव)

माँ तो माँ होती है, माँ से बढ़कर कोई और नहीं।
माँ की ममता का इस जग में, दे सकता कोई मोल नहीं।।
है छवि निराली माँ तेरी, अद्भुत आभा प्रतीत सदा।
हर बच्चे से अटूट स्नेह, झरता झरना भरपूर सदा।।

नैनों से बरसती शीतलता और पवित्रता झरती जैसे थी।
तपिश आत्मा की, मानो पल भर में बुझती ऐसे थी।।
संपूर्ण समर्पण की देवी, दिव्य गुणों का गहना था।
निमित्त भाव, निर्माण सदा, यही आपका कहना था।।
जीवन को संगीत नया, तुझसा कहाँ कोई दे पाये।
तूने वो प्यार-दुलार दिया, तुझे भूल भला कैसे पायें।।

अधरों पर मुस्कान सदा, करती थी हर मुश्किल आसान।
देखी जिसने भी एक झलक, पूरे होते उसके अरमान।।
सानिध्य आपका जिसने भी माँ, जीवन में अपने पाया।
जीवन को मिली नई दिशा, लक्ष्य श्रेष्ठ उसने पाया।।
हाँ जी का पाठ सदा तुझसा, माँ कहाँ कोई बजा पाए।
तूने वो .....

बाबा की शिक्षाओं का माँ, प्रत्यक्ष रूप तूने धारा।
राज़ ज्ञान के खुलते गए, जब सच्ची गीता को उच्चारा।।
माँ, आज भक्त भी तेरे ही गुणगान सदा ही करते हैं
जय अम्बे, जय जगदम्बे भवानी उद्घोष सदा ही करते हैं।।
स्नेह की सरिता बहा करे माँ, तेरे आँचल में जो आए
तूने वो .....

नहीं देखा साकार मगर महसूस सदा करते आये।
प्यार तेरा माँ रूहानी, चितवन में सदा भरते आये।।
हंसवाहिनी, श्वेतधारिणी, तेरा दिव्य रूप सुहाना है।
हे सरस्वती माँ! तेरे कदमों पर कदम हमें भी बढ़ाना है।।
मानवता की सच्ची मिसाल, तुझ-सी और कहाँ पायें
तूने वो .....

परम भाग्यशाली कुमारी जीवन

• ब्रह्माकुमारी वंदना, सम्बलपुर

अगर भगवान का अस्तित्व ना होता तो आज अधर्म का प्रभाव इतना बढ़ गया होता कि धर्म के पथ पर चलने वालों का जीना मुश्किल हो जाता। ऐसे धर्म-रक्षक भगवान का वास्तविक परिचय किसी को मिल जाये तो बड़े भाग्य की बात है। वर्तमान परिस्थितियों में भगवान का मिल जाना, एक लॉटरी से कम नहीं है। आज घर-घर में दुख-अशान्ति की वजह से सब लोग भगवान को खोज रहे हैं। कोई मन्दिर में, कोई सत्संग में, तो कोई साधु-संन्यासियों के बीच भगवान को पाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन हमारा कितना बड़ा भाग्य! देखो, हमें घर बैठे भगवान मिल गये। जिसको सारी दुनिया ढूँढ़ रही है, उसने हमें करोड़ों लोगों के बीच में से ढूँढ़ निकाला। सबसे बड़े भाग्य की बात यह है कि संगमयुग में हमें कुमारी जीवन मिला।

परमपुरुष बन गया जीवन-साथी

यूं तो परमपिता परमात्मा के साथ संगमयुग में हम आत्माओं के सर्वसंबंध हैं, उनमें भी साजन का संबंध बड़ा रमणीक है। संगमयुग पर अगर हम माता होते तो शरीर का पति अलग और आत्मा का पति अलग होता। यदि कुमार या अधरकुमार होते तो खुद को परमपिता परमात्मा की सजनी समझ आनन्दित होने से पहले यह समझने में बुद्धि लगानी पड़ती कि हम आत्मा हैं, पुरुष रूप वाला शरीर तो आवरण है और आत्मा ही परमात्मा की सजनी है। लेकिन कन्या रूप में भगवान को साजन बना लेना मुश्किल काम नहीं है। कन्या को तो एक न एक दिन किसी को जीवन-साथी बनाना ही होता है। इस दुनिया के साधारण पुरुष के बदले परमपुरुष को जीवन-साथी के रूप में पा लिया, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

सारे गुण एक परमात्मा में

चारों युगों के कुल 84 जन्मों में से 83 जन्मों में हमने शादी की। घर-परिवार बसाये पर भगवान से संबंध जोड़ना और सारे संसार को अपना परिवार समझना, यह दुर्लभ सौभाग्य सारे कल्प में संगमयुग के अलावा किसी अन्य युग में नहीं मिलता। पाँच हज़ार वर्षों में एक ही बार भगवान की अर्धांगिनी होने का मौका मिलता है। अगर कोई यह सुनहरा मौका अपने हाथ से गँवा दे तो वह दुनिया में सबसे बड़ा दुर्भाग्यशाली है। आज के घोर कलियुग में तो स्थिति ऐसी है कि कभी-कभी मानव को खुद पर भरोसा करने में भी डर लगता है। ऐसे में किसी और पर भरोसा करके उसे जीवन समर्पित कर देना तो और भी भयभीत करने वाली बात है। और फिर, सच बात यह है कि इस भ्रष्टाचारी दुनिया में मनपसंद जीवन-साथी मिल पाना कोई आसान बात नहीं है। कन्या ऐसा जीवन-साथी ढूँढती है जो बहुत सुन्दर, बहुत बुद्धिमान और बहुत धनवान हो। ये सारे गुण एक परमात्मा के सिवाय और किसी में नहीं हो सकते।

भाग्य के साथ जुड़ गया भगवान का नाम

परमात्मा शिव को ही सत्यम् शिवम् सुन्दरम् कहा गया है अर्थात् परमात्मा शिव तीनों लोकों में सबसे अधिक सुंदर हैं। परमात्मा शिव को ही बुद्धिमानों की बुद्धि कहा जाता है अर्थात् सबसे अधिक बुद्धिमान परम पुरुष हैं। परमात्मा शिव ही धनवानों को भी धन देने वाले सबसे धनवान परम पुरुष हैं। इन तीनों गुणों से भरपूर परमात्मा को, बिना हिचकिचाहट के जीवन-साथी के रूप में पसंद कर लेना उचित होगा। सत्य तो यह है कि

दुनिया के रचयिता भगवान शिव ने अपने दिल की मल्लिका पार्वती के रूप में हमें स्वयं पसंद किया है अर्थात् हमारा जीवन सार्थक हो गया है। किसी कन्या को यदि प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति का बेटा अपनी पत्नी के रूप में पसंद करे तो वह कन्या खुद को भाग्यशाली महसूस करेगी और आगे-पीछे सोचे बिना खुद को उसके आगे समर्पित कर देगी क्योंकि वह बड़े घर की बहू बनेगी। बाद में चाहे उसके भाग्य में दुख हो पर थोड़े समय के सुख के लिए वह सब कुछ कर सकती है। लेकिन यहाँ तो हमारे भाग्य के साथ भगवान का नाम जुड़ रहा है जो प्रधानमंत्रियों और राष्ट्रपतियों को भी बनाने वाला है इसलिए हमारा भविष्य तो उजला ही उजला हो गया। खुद को भगवान की पत्नी समझने से हम उनकी संपूर्ण संपत्ति की अर्ध-उत्तराधिकारी बन जाती हैं, इसलिए माया का बड़े से बड़ा तूफान भी हमारा कुछ नुकसान नहीं कर सकता।

'सदा सौभाग्यवती भव' का वरदान

शरीरधारी जीवन-साथी के एक ना एक दिन हमें अकेले छोड़ करके जाने की संभावना रहती है। वर्तमान हालत में, अकालमृत्यु कब किसकी हो जाये, कहा नहीं जा सकता। एक बार किसी को जीवन-साथी के रूप में स्वीकार कर लेने के बाद उसे हमेशा के लिए खो देने से जीवन निराशा से भर जाता है। उस समय खुद को संभालना मुश्किल हो जाता है। **फिर यह बात भी है, देहधारी जीवन-साथी कितना भी अच्छा, ऊँचा, समर्थ क्यों न हो, कोई भी नारी सामने आई हुई परेशानियों को दूर करने के लिए भगवान को ही पुकारती है। तो क्यों न उसी भगवान को जीवन-साथी बना लिया जाये ताकि किसी अन्य को कभी भी पुकारना ना पड़े। भगवान ऐसे साजन हैं जो जीवन भर हमारे साथ कंबाइंड होकर रहेंगे और शरीर छोड़ने के बाद हम उनका हाथ पकड़कर उसके साथ ही अपने प्यारे परमधाम जायेंगे।** भगवान पति का हाथ एक बार पकड़ लिया तो अंतिम श्वास तक उनके हाथों में हमारा हाथ रहेगा। ऐसे पति की मंगलकामना के लिए किसी के सामने प्रार्थना करने की भी ज़रूरत नहीं क्योंकि वह स्वयं सर्व के मंगलकारी भगवान हैं। भगवान ने स्वयं आत्म-स्मृति का तिलक लगाकर हमें 'सदा सौभाग्यवती भव' का वरदान दिया है। हम हमेशा आत्मिक-स्मृति में रहें तो हमको हमारे सुहाग अर्थात् परमात्मा की याद स्वत: बनी रहेगी।

ज़िम्मेदारियाँ निभाने को तैयार हैं भगवान

एक कुमारी अगर दृढ़ संकल्प के साथ भगवान के आगे खुद को समर्पित कर देती है तो अगले ही पल भगवान उसकी सारी जिम्मेदारियाँ खुद निभाने को तैयार रहते हैं। वह खुद भले ही कभी-कभी अपने प्रियतम को भूल जाये पर वह परमप्रियतम हर पल उसको सहयोग देने के लिए तैयार रहते हैं। एक सच्चे जीवन-साथी के रूप में बाबा हमको एक पल के लिए भी किसी भी परिस्थिति में दुखी नहीं होने देते। कितने आश्चर्य की बात है, अखण्ड ब्रह्मचर्य में रहते हुए हम अंतिम श्वास तक सुहागन रहते हैं।

यादगार बनाने का युग

देवियों को लोग अखण्ड ब्रह्मचारी और अखण्ड सुहागन कहते हैं क्योंकि उनके अमर सुहाग स्वयं भगवान शिव हैं जो अशरीरी हैं। देवियों का यह गायन संगमयुग की कुमारियों के प्रभु-समर्पण का ही यादगार है। इस जन्म के दिव्य विवाह का गायन भक्ति मार्ग के 2500 वर्षों तक भिन्न-भिन्न नाम और भिन्न-भिन्न रूपों में चलता रहता है। अत: संगमयुग यादगार बनाने का युग है। जो परमात्मा पिता की याद में रहते हैं, उनका ही यादगार बनता है। ❖

देवी सरस्वती का वरदान कैसे मिले?

• ब्रह्माकुमार डॉ.अजीत राणा, रोहतक

पिछली सदी से प्रतियोगिता सभी क्षेत्रों में तीव्र गति से बढ़ी है परंतु शिक्षा जगत में प्रतियोगिता अपेक्षाकृत अधिक वेग के साथ बढ़ी है तथा बढ़ रही है। इसलिए विद्यार्थियों के लिए वांछित सफलता प्राप्त करना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है। उनके सामने प्रश्नचिन्ह बना रहता है कि क्या तरीका अपनायें ताकि अमुक परीक्षा में अग्रिम स्थान प्राप्त करें? इसके लिए कुछ विद्यार्थी अनुचित साधन अपनाने से भी नहीं चूकते हैं परंतु ऐसे विद्यार्थी निर्धारित विषयों के समूचे ज्ञान से वंचित होने के साथ-साथ आगे चलकर किसी न किसी रूप में असफलता का सामना करते हैं तथा अपने लक्ष्य को नहीं भेद सकते हैं।

विद्या के क्षेत्र में संपूर्ण सफलता प्राप्त करके मनपसंद कैरियर बनाने के लिए विद्या की देवी सरस्वती का आशीर्वाद या वरदान प्राप्त करना आज अति आवश्यक हो गया है। लौकिक में कोई बड़ा व्यक्ति किसी के प्रति आशीर्वचन तभी निकालता है जब वह उससे पूर्ण रूप से प्रसन्न होता है। अत: सरस्वती देवी को प्रसन्न करके ही हम उनसे वरदान प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए यह जानना अति आवश्यक है कि सरस्वती देवी को प्रसन्न कैसे किया जाये?

क्या वह फूलों का हार भेंट करने से या फूल चढ़ाने से या धूप-अगरबत्ती जलाने या सरस्वती वंदना करने से खुश होंगी? वास्तव में उन्हें खुश करने के लिए हमें उन द्वारा धारण किये गये अलंकारों पर ध्यान देना होगा। ये अलंकार उनकी पसंदगी व नापसंदगी के द्योतक हैं जो इस प्रकार हैं –

1. कमल आसन:- भक्ति मार्ग में सरस्वती देवी को कमल के फूल (पवित्रता के प्रतीक) पर बैठे दर्शाया जाता है अर्थात् सरस्वती देवी को पवित्रता अति प्रिय है। विद्यार्थियों को विद्या प्राप्ति की प्रत्येक क्रिया को पवित्रता के आधार से संपन्न करना होगा जैसेकि –

- **ब्रह्मचर्ययुक्त जीवन –** विद्यार्थी जीवन के लिए सबसे प्रथम आवश्यकता स्वस्थ मन तथा स्वस्थ शरीर की होती है जो पवित्रता व ब्रह्मचर्य से ही प्राप्त हो सकता है। इसलिए सरस्वती देवी का वरदान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को न केवल ब्रह्मचर्य धारण करना होगा बल्कि किसी से लड़ाई-झगड़ा आदि करने से भी परहेज़ करना होगा। लड़ाई-झगड़े से मन की शान्ति तथा शक्ति नष्ट होती है, अन्यों को दुख भी होता है, इससे विद्यार्थी अपने मन में अन्यों के प्रति दुर्भावना, द्वेष आदि उत्पन्न कर लेता है, यह सब अपवित्रता है।
- **पाठ सीखने में मन लगाना –** विद्यार्थी, कक्षा में बैठे शिक्षक से पाठ सीख रहे होते हैं परंतु प्राय: अधिकतर का मन कम या अधिक, कक्षा से बाहर विचरण करता है जो अपवित्रता है। यह सब माता-पिता तथा शिक्षक के प्रति आज्ञा-भंग करना है। वे यह सब जानकर दुखी होते हैं तथा सरस्वती देवी भी अप्रसन्न होती हैं।
- **पूरी लगन से गृहकार्य करना –** शिक्षण संस्थाओं में कक्षा के अतिरिक्त विद्यार्थियों को घर पर करने के लिए कुछ होमवर्क दिया जाता है या अच्छे विद्यार्थी स्वयं भी घर पर पढ़ाई करने की योजना बनाते हैं। इस कार्य को पूरी लगन व गंभीरता से संपन्न करना उनका परम कर्त्तव्य बन जाता है। गृह-कार्य को अच्छी प्रकार न करना विद्यार्थियों के लिए अपने कर्त्तव्य

से विमुख होना है। इससे टीचर्स तथा माता-पिता को दुख पहुँचता है जो अपवित्रता है। इससे विद्या की देवी खुश नहीं होती तथा आशीर्वाद भी नहीं देती हैं।

- **समूचे कोर्स को सीखना –** किसी कक्षा को पास करने को सैद्धान्तिक दृष्टि से यह माना जाता है कि विद्यार्थी को उस कक्षा के सभी विषयों की सारी समझ है। यही न्यायोचित भी है। जो विद्यार्थी विभिन्न विषयों के कुछेक चयनित पाठ याद करके परीक्षा पास करने की कोशिश करते हैं, वे विद्या की देवी को धोखा देते हैं। इतना ही नहीं, ऐसा करने वाले विद्यार्थी परीक्षा में आमतौर पर धोखा खाते हैं।
- **परीक्षा के लिए पूर्ण तैयारी –** आजकल विद्यार्थियों में परीक्षा के दौरान नकल करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। यह बहुत ही अपवित्र तथा घृणित कार्य है। ऐसे विद्यार्थियों से विद्या की देवी कभी भी प्रसन्न नहीं हो सकती। इसलिए उनको सरस्वती देवी का कभी भी वरदान प्राप्त नहीं हो सकता तथा वे अपने लक्ष्य में कभी भी सफल नहीं हो सकते। इस संबंध में मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जब मैं अपने गांव के स्कूल की छठी कक्षा की परीक्षा दे रहा था, तब अन्य विद्यार्थियों को परीक्षा में नकल करते देख कर मुझे भी नकल करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। विज्ञान के परीक्षा-पत्र में मैंने विज्ञान की अपनी नोटबुक रख ली। परंतु जब मैं नकल करने लगा तो इसको अनुचित कार्य जानकर मैं इतना दुखी, बेचैन तथा भयभीत हुआ कि मेरे शरीर को बहुत अधिक पसीना आ गया। इन दुख के पलों में मैंने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया कि ज़िन्दगी भर कभी भी नकल नहीं करूँगा। यह निर्णय करने तथा इसको पूर्ण रूप से निभाने का परिणाम यह हुआ कि मैं शिक्षा जगत में युनिवर्सिटी में प्रोफेसर पद से 2007 में सेवानिवृत्त हुआ हूँ। वे विद्यार्थी जिनको नकल करते देख मुझे प्रेरणा मिली थी, उनमें से कोई भी बी.ए. तक भी नहीं पहुँच पाया।

2. माला और पुस्तक :- भक्तिमार्ग में सरस्वती की तस्वीर में उनके एक हाथ में माला तथा दूसरे हाथ में पुस्तक दर्शाई गई है। यह इस बात की प्रतीक है कि विद्या प्राप्ति के लिए पढ़ाई तथा ईश्वर की याद साथ-साथ हों। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि पढ़ाई के साथ शिव परमात्मा को कैसे याद करें? इस पर मेरे अपने अनुभव के अनुसार हम पढ़ाई शुरू करने से पूर्व कुछ समय के लिए परमात्मा की याद में बैठ जायें तथा फिर पढ़ाई करें। इससे मन शांत व शक्तिशाली हो जाता है। एक शांत व शक्तिशाली मन पढ़ाई को अच्छी प्रकार से तथा शीघ्रता से ग्रहण करता है।

3. वीणा:- सरस्वती देवी के हाथों में वीणा भी दर्शाई गई है जो इस बात का प्रतीक है कि विद्यार्थी को हमेशा मधुर व ज्ञानयुक्त वाणी में बोलना चाहिए। उसको कक्षा में निर्भय होकर आदरपूर्वक तथा मधुर ढंग से अध्यापक से प्रश्न पूछने चाहिएँ। उसको अपने साथियों तथा अन्य द्वारा की गई गलती का मधुर शब्दों में विरोध करना चाहिए। सामाजिक बुराइयों का भी मधुर शब्दों में विरोध करते हुए अपनी आवाज़ निर्भय होकर बुलंद करना चाहिए। हिचकना नहीं चाहिए।

आत्म-निरीक्षण:- लक्ष्य प्राप्ति के लिए अति आवश्यक है कि विद्यार्थीगण, प्रतिदिन शयन से पहले पांच मिनट के लिए शिव परमात्मा की याद में स्वयं द्वारा सारे दिन में किये गये पढ़ाई के कार्य का आत्म-निरीक्षण करें। इसके साथ ही अगले दिन की योजना बनायें तथा पूर्व दिन में की गई पढ़ाई की कमियों को दूर करने पर ध्यान दें। साथ ही पढ़ाई के

लक्ष्य को रोज़ाना याद करें ताकि याद ताज़ा रहे तथा भूल न पड़े। ऐसा निरंतर करने से तीन महीने में ही पढ़ाई की अवस्था सुधर जायेगी।

निष्कर्ष :- शिक्षा जगत में निरंतर बढ़ती प्रतियोगिता के अंतर्गत लक्ष्य प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों को विद्या की देवी सरस्वती की गोद में जाना होगा। उन्हें अपने जीवन में ब्रह्मचर्य, पवित्रता तथा निष्ठा से कार्य करना होगा। इसके साथ ही परीक्षा में नकल न करना, पढ़ाई से पूर्व मेडिटेशन का अभ्यास, ज्ञानयुक्त बोल तथा आत्म-निरीक्षण करना होगा। ऐसा करने वाले विद्यार्थी ही सरस्वती देवी का वरदान प्राप्त करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे। ❖

अलौकिक माँ की अलौकिक गोद का आकर्षण

ब्रह्माकुमारी गोपी, मधुबन

एक बार मम्मा दिल्ली में आई थी तब मैं मनोहर दादी के साथ करनाल में रह रही थी। दादी, मम्मा से मिलाने मुझे दिल्ली ले चली। उस दिन मम्मा के साथ कुमारियों की पिकनिक थी। शाम को पिकनिक के समय मीठी मम्मा के स्नेह का गीत गाते मम्मा की गोद में चली गई जैसे एक छोटा बच्चा अपनी माँ की गोदी में चिपक जाता है। एक अनोखी शक्ति मिलने का अनुभव हुआ।

सन् 1963 में करनाल मॉडल टाउन में नया सेन्टर खोला गया, मम्मा दिल्ली में आई हुई थी। नये सेन्टर पर आने का निमंत्रण देने के लिए रिटायर्ड बुजुर्ग पाँच भाई तथा मैं दिल्ली गये। रास्ते में मैंने बताया, सभी छोटे-बड़े बच्चे मम्मा से दृष्टि लेते गोदी में जाते हैं। उन्हें आश्चर्य लगा और बोलने लगे, हम गोद में कैसे जायेंगे? खैर, जब दिल्ली पहुँचे और राजौरी गार्डन सेन्टर पर मम्मा के साथ मुलाकात हुई, तो मैंने निमंत्रण-पत्र दिया। प्यारी मम्मा ने सबको दृष्टि दी, दृष्टि लेते-लेते उन भाइयों को इतना आकर्षण हुआ जो एक के बाद एक सभी मीठी माँ की गोद में समा गये। तो ऐसा था माँ का रूहानी आकर्षण। सभी ने अलौकिक माँ की अलौकिक गोदी का अनुभव किया।

मम्मा का दो बार करनाल में आना हुआ तो मुझ आत्मा को मम्मा के लिए भोजन बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब मम्मा भोजन करती तो प्यार से मुझे गिट्टी खिलाती थी और कहती थी, देखो तुमने बाबा की याद में कितना अच्छा भोजन बनाया है। सेवाकेन्द्र पर मम्मा मुरली चलाने के बाद सभा में उठकर अपने हाथों से सर्व बच्चों को दृष्टि देते टोली खिलाती थी।

मधुबन में प्रात:क्लास में मीठी मम्मा मुरली चलाती थी। बाबा के हॉल में प्रवेश करते ही मम्मा अपनी वाणी बंद कर देती थी और गीत बजता था। फिर बाबा महावाक्य उच्चारण करते थे, मम्मा संदली पर बैठ बाबा की तरफ मुखड़ा करके मुरली सुनती थी तो हम सब थोड़े से बच्चे सम्मुख पट पर बैठ सुनते थे। यज्ञ सेवा, दोपहर में घूमना-फिरना या एक-दो के अनुभव सुनना और सुनाना, इस प्रकार से दिनचर्या चलती थी। इससे बहुत कुछ सीखने को मिलता था। एक बार मैंने मम्मा से पूछा, मम्मा, अनुभव की लेन-देन करनी चाहिए? मम्मा बोली, अनुभव सुनकर बहुत अनुभव बढ़ता है और नई-नई प्रेरणायें मिलती हैं। मैंने कहा, मम्मा, आज मैंने भाऊ विश्वकिशोर से बहुत ही अच्छी-अच्छी अनुभव की बातें सुनी, तो मम्मा बोली, बहुत अच्छा किया। ❖

मैं सभी दवाइयों से मुक्त हो गया

• ब्रह्माकुमार गुरदीप, भटिंडा

मैं बाल्यकाल से नास्तिक वृत्ति का था। जब स्कूल जाने लगा और धर्म के नाम पर इतिहास की अनेक लड़ाइयों के बारे में पढ़ा तो यह वृत्ति और बलवती हो गई। समाज में भी अलग-अलग धर्मों के बीच और एक ही धर्म के बीच भी झगड़े देखे तो मन में यह विचार आने लगा कि धर्म और भगवान का नाम लेने का क्या फायदा अगर लड़ाई ही करनी है तो।

अंधविश्वास छुटा पर शराब लग गई

मैं एक गाँव में पशुचिकित्सक के रूप में सेवारत था। सन् 1992 में मेरा संपर्क तर्कशील सोसायटी से जुड़े एक व्यक्ति से हुआ। वहाँ का साहित्य पढ़ा, काफी तसल्ली हुई, अंधविश्वास से विश्वास उठ गया और मन में पक्का हो गया कि भगवान नहीं है। यहाँ मैंने यह सीखा कि मनुष्य को मनुष्य से प्यार करना चाहिए। जाति, धर्म आदि को बीच में नहीं लाना चाहिए। एक तरफ तो मैं अंधविश्वास आदि को नहीं मानता था लेकिन दूसरी तरफ मुझे शराब की बुरी लत लग गई।

शराब ने मेरा सब कुछ छीन लिया

शादी के बाद पत्नी के साथ विचारों का मिलान नहीं हुआ, तनाव बढ़ने लगा और मैं अपने आप पर नियंत्रण खो बैठा। जब किसी का पशु ठीक करने जाता और वहाँ से पैसे आदि मिलते तो उन पैसों से शराब पी लेता था लेकिन घर आना बड़ा मुश्किल हो जाता था। कपड़े खराब हो जाते थे, होश नहीं रहता था। कई बार तो मुझे उठाने में घरवालों को मशक्कत करनी पड़ती थी। इस शराब ने मेरा सब कुछ छीन लिया। मेरा वजन घट गया, थायराइड का अटैक हो गया।

मांसाहार से जोड़ों में दर्द

शराब के साथ माँसाहार के कारण शरीर में प्रोटीन की मात्रा बढ़ गई जिस कारण यूरिक एसिड बढ़ने लगा और शरीर के जोड़ों में स्थायी दर्द रहने लगा। मैं डिप्रेशन का भी शिकार हो गया जिस कारण ज़िन्दगी मुझे बोझ लगने लगी, जीने का उद्देश्य खत्म हो गया। केवल टाइम पास करने के लिए कार्यस्थल पर जाता, उमंग नाम की कोई चीज़ नहीं रही। किसी बात में मन नहीं लगता था, खुशी बिल्कुल खत्म हो गई। जब बीमारी में तन और मन अस्वस्थ हो गया तो सन् 1998 में तर्कशील सोसायटी को भी छोड़ दिया।

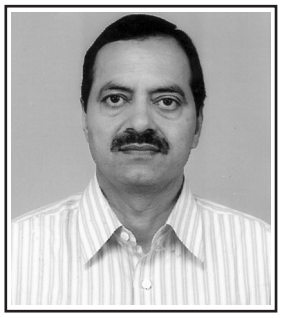

मन चाहता था नवीनता

मेरा मन पुन: किसी नई चीज़ को पाना चाहता था पर कुछ मिल नहीं रहा था। इसी खोज में गुरुद्वारे जाने लगा पर वहाँ भी मन नहीं लगा, कुछ प्राप्ति नहीं हुई। बीमारियों से तो परेशान था ही। थायराइड के डॉक्टर ने कहा, आप शराब छोड़ो, नहीं तो जीवन-भर यह बीमारी आपका पीछा नहीं छोड़ेगी पर मैं शराब छोड़ने में असमर्थ था। जोड़ों के दर्द वाले डॉक्टर ने यूरिक एसिड की वृद्धि के कारण माँसाहार बंद करने को कहा पर मैं वह भी नहीं कर सका।

ठीक होने की प्रबल इच्छा

इतना सब होते भी, मुझमें इतना मनोबल अवश्य था कि मुझे मरना नहीं है, ठीक होना है पर ठीक होने का रास्ता नहीं मिल रहा था। सन् 2003 में बाबा रामदेव द्वारा सिखाये गये योग की सीडी लाकर मैंने सारे

आसन सीखे, योग करने लगा। योग करने के लिए सुबह उठना पड़ता था। शराब सुबह उठने नहीं देती थी। योगासन के अभ्यास के कारण शराब की मात्रा में कमी आ गई। प्रतिदिन की जगह हफ्ते में एक-दो बार ही रह गई लेकिन मेरा तनाव फिर भी नहीं मिटा इसलिए तनाव की गोलियाँ खानी शुरू कर दी। गोलियों से परेशानी और बढ़ गई। मैं इन गोलियों को छोड़ना चाहता था। योगासन से शरीर में कुछ फायदे हुए पर मन की परेशानियों में कोई कमी नहीं आई।

रक्षाबंधन का हृदयस्पर्शी अर्थ

मेरी अंधेरी ज़िन्दगी में प्रकाश की किरण लेकर सन् 2005 का रक्षाबंधन का दिन आया। मैं गाँव तिओना में ड्यूटी पर था। पास ही दूसरे हॉस्पिटल में एक बहन मेडिकल डॉक्टर के रूप में सेवारत थी। उसने मुझे कहा कि आज शाम को मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम में जाना है, आप भी मेरे साथ चलना। तब तक मैंने तो इस संस्था का नाम भी नहीं सुना था। वह अकेली जाने में झिझक रही थी। मैंने कहा, मेरी नेचर धार्मिक नहीं है, कहीं बहसबाजी न हो जाये। फिर भी मैं ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर अपनी युगल के साथ आया। वह डॉक्टर बहन तो पहले से ही पहुँची हुई थी। आश्रम के एक हॉल में हम सभी आगंतुक बैठे थे और एक ब्रह्माकुमारी बहन प्रवचन कर रही थी। प्रवचन की एक लाइन करंट की तरह मेरे संपूर्ण अस्तित्व में दौड़ गई। रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाते हुए बहनजी ने कहा, 'आपकी जो भी स्थिति है या आपकी जो भी परेशानियाँ हैं, उनकी जननी आप स्वयं हैं, उनसे अपनी रक्षा करना ही रक्षाबंधन है।' इसके बाद हॉल में लगे एक चित्र पर मेरी नज़र गई, 'राजयोग द्वारा सुख-शान्ति की प्राप्ति।' मैंने मन में सोचा, शान्ति और खुशी ही तो चाहिए तो क्यों न राजयोग मेडिटेशन ही सीख लें। मुझमें बहनों से बात करने की हिम्मत नहीं थी, संकोच था कि इतनी पवित्र बहनों से बात कैसे करें।

कोई देहधारी भगवान नहीं हो सकता

एक भाई के माध्यम से मैंने जानकारी हासिल की और अगले दिन शाम से मेरा सात दिन का कोर्स शुरू हो गया। मैं तो तर्कवादी था। मन में तर्क भरे पड़े थे इसलिए बहुत अच्छा अनुभव तो नहीं हुआ लेकिन परमात्मा का सत्य परिचय मन में जँच गया। मन ने माना कि कोई भी देहधारी भगवान नहीं हो सकता। महीने भर बाद 'माइंड-बॉडी-मेडिसन' कांफ्रेंस में माउंट आबू आना हुआ। इस कांफ्रेंस ने तो मेरी बुद्धि का ताला ही खोल दिया। कांफ्रेंस में बताया गया कि यदि आप मन में नेगेटिव विचार लाकर बीमार हो सकते हो तो मन में पोजिटिव विचार लाकर ठीक भी हो सकते हो। इस बात को मैंने चुनौती के रूप में लिया और अपने पर प्रयोग करके देखा, काफी अच्छे अनुभव हुए।

शराब और मांसाहार छोड़ने में सफलता

सेवाकेन्द्र पर एक दिन एक बहन को देवी के रूप में सजाकर बिठाया गया था। सभी उसके सामने किसी न किसी बुराई को छोड़ने का प्रण कर रहे थे। मैंने भी प्रण किया शराब और माँसाहार छोड़ने का और मेरा प्रण सफल रहा।

पहले छह महीने में डिप्रेशन और घुटने की दवाई छूट गई। अगले दो वर्ष में थायराइड समाप्त हो गया। अब मैं कोई दवाई नहीं खाता हूँ। बहुत खुश और संतुष्ट रहता हूँ और अपनी हिम्मत अनुसार यज्ञ सेवा में व्यस्त भी रहता हूँ। ❖

ईश्वर को याद करने के लिए वित्त की नहीं, पवित्र चित्त की जरूरत है